छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
माह – कार्तिक–मार्गशीर्ष, संवत् 2080
अक्टूबर+नवम्बर 2023 (संयुक्तांक)

ओ३म्

अंक 210, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

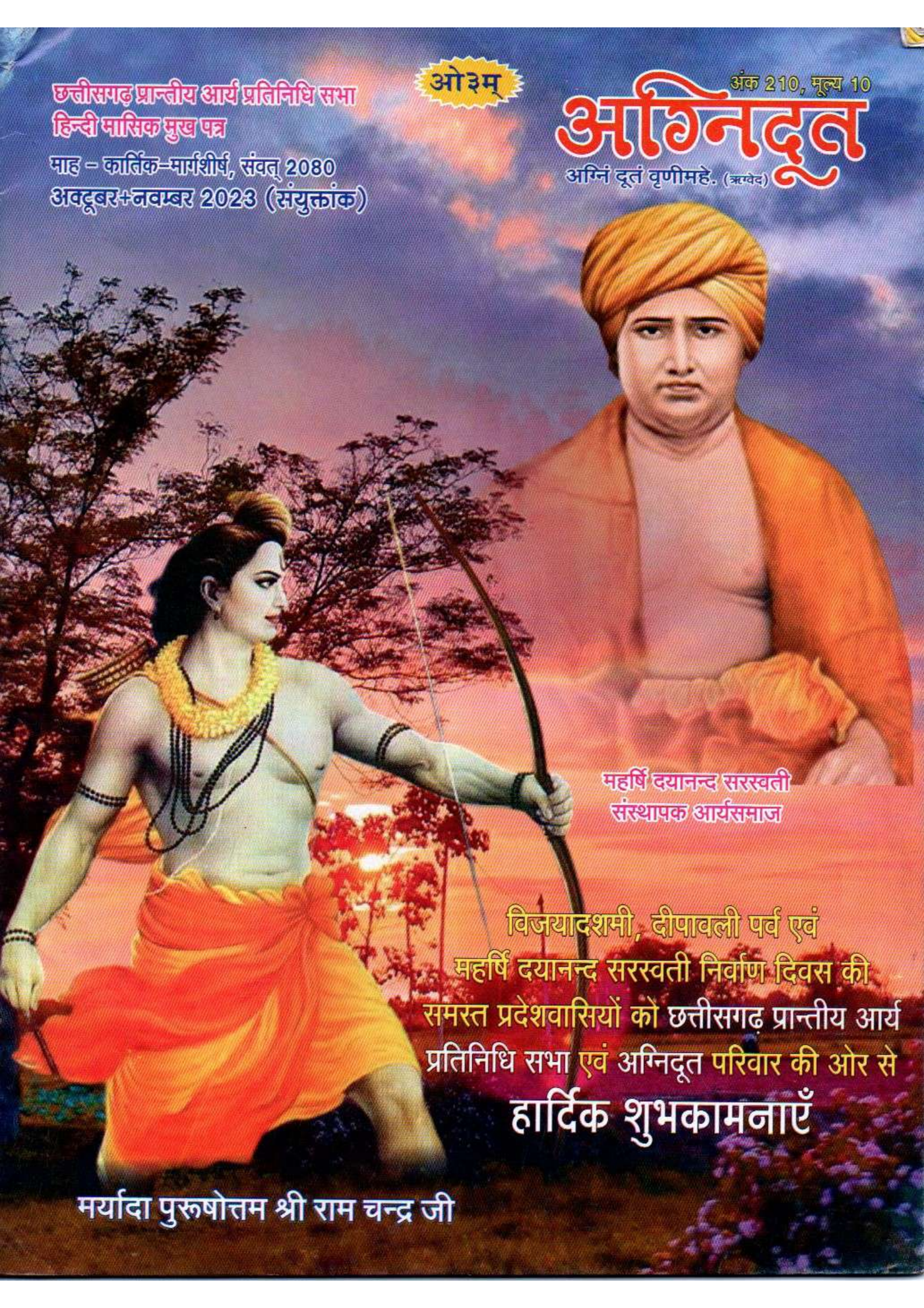

महर्षि दयानन्द सरस्वती
संस्थापक आर्यसमाज

विजयादशमी, दीपावली पर्व एवं
महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्वाण दिवस की
समस्त प्रदेशवासियों को छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य
प्रतिनिधि सभा एवं अग्निदूत परिवार की ओर से

हार्दिक शुभकामनाएँ

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम चन्द्र जी

पंजी. क्र. : छ.ग. राज्य-420, दिनांक 26-9-2003

ओ३म्

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्यप्रतिनिधि सभा

प्रशासनिक कार्यालय : दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.)

कार्यकारिणी सूची (दिनांक 24-7-22 से 23-7-25)

क्र.	पदनाम	पदाधिकारियों के नाम	दूरभाष/मोबा.
1.	प्रधान	डॉ. रामकुमार पटेल	7223835586
2.	उपप्रधान	श्री रामनिवास गुप्ता	9340799962
3.	उपप्रधान	श्री धरणीधर आर्य	9926849334
4.	उपप्रधान	डॉ. वेदव्रत आर्य	7566353498
5.	उपप्रधान	श्री लक्ष्मीनारायण महतो	9425508436
6.	उपप्रधान	श्री रमेश कुमार साहू	9755384549
7.	मंत्री	श्री अवनीभूषण पुरंग	9893063960
8.	उपमंत्री (कार्या.)	श्री रवि आर्य	9424118960
9.	उपमंत्री	श्री कपिलदेव शास्त्री	9691914431
10.	उपमंत्री	श्री राजकुमार वर्मा	7987739600
11.	उपमंत्री	श्री ताराकांत प्रधान	9977164770
12.	उपमंत्री	श्री भागवतराम साहू	9993908215
13.	उपमंत्री	श्री आचार्य रणवीर	9009380550
14.	कोषाध्यक्ष	श्री जगबन्धु आर्य	9770331191
15.	पुस्तकाध्यक्ष	श्री राधेश्याम गुप्ता	9479233100
		अंतरंग सदस्यों के नाम	
1.	अंतरंग सदस्य	श्री रामेश्वर आर्य	9669126354
2.	अंतरंग सदस्य	श्री लेखनकार आर्य	6260432499
3.	अंतरंग सदस्य	श्री हेमसागर आर्य (सोममुनि)	7089651303
4.	अंतरंग सदस्य	श्री चितरंजन पटेल	9826997055
5.	अंतरंग सदस्य	श्री राजीव आर्य	9770840030
6.	अंतरंग सदस्य	श्री ओमप्रकाश शास्त्री	7974825004
7.	अंतरंग सदस्य	श्री जोगीराम आर्य	9977152119
8.	अंतरंग सदस्य	श्रीमती अर्चना खण्डेलवाल	9827895520
9.	अंतरंग सदस्य	डॉ. विक्रम आर्य	6264697712
10.	अंतरंग सदस्य	श्री घनश्याम पटेल	9755023905
11.	अंतरंग सदस्य	श्री राजू सिंह	9630234406
12.	अंतरंग सदस्य	श्री रोहित शास्त्री	9907684970
13.	अंतरंग सदस्य	श्री शशिभूषण आर्य	9399776553
14.	अंतरंग सदस्य	श्री हेमंत कुमार सोनी	9407704371
15.	अंतरंग सदस्य	श्री महिपत मुनि	8719877245

1. मुख्य अधिष्ठाता : डॉ. विक्रम आर्य (6264697712)
2. वेदप्रचार अधिष्ठाता : आचार्य राकेश कुमार शास्त्री (9556228159)
3. आर्यवीर दल अधिष्ठाता : श्री कान्हूराम गुप्ता (8319669840)
4. विद्यार्य एवं धर्मार्य सभा : डॉ. अजय आर्य (8871497003)
5. न्यायार्य सभा : श्री ज्योतिर्मय आर्य (9826130163)

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् - 2080
सृष्टि संवत् - 1,96,08,53,124
दयानन्दाब्द - 199

प्रधान सम्पादक
डॉ. रामकुमार पटेल
प्रधान सभा
(मोबा. 7223835586)

प्रबंध सम्पादक
श्री अवनी भूषण पुरंग
मंत्री सभा
(मोबा. 9893063960)

सहप्रबंध सम्पादक
आचार्य जगबन्धु आर्य
कोषाध्यक्ष सभा
(मोबा. 9770331191)

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मोबा. - 8103168424

पेज सज्जा : श्रीनारायण कौशिक

– कार्यालय पता –
छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर,
दुर्ग (छ.ग.) 491001
फोन : (0788) 4225499
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वार्षिक शुल्क : 100, दसवर्षीय 800

वर्ष - 18, अंक - 11 ओ३म् मास/सन् - अक्टूबर+नवम्बर 2023

श्रुतिप्रणीत-सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त-दीप्त वेद-सारभूतनिश्चयम् ।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सङ्घसङ्कम्,
सभाग्निदूत-पत्रिकेयमादधातु मानसे ।।

विषय सूची

			पृष्ठ क्र.
1.	मेरे राष्ट्र का आधिपत्य ग्रहण करो	स्व. रामनाथ वेदालंकार	04
2.	सुखमय जीवन का एक ही सूत्र : नैतिकता	आचार्य कर्मवीर	05
3.	हिन्दुओं पर विकट विपत्ति आने वाली है	डॉ. रघुवीर वेदालंकार	08
4.	श्रीराम का "मन्यु"	मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति	12
5.	वेद प्रकाश से ही मानवता का विकास सम्भव	डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह	15
6.	जीवन के साथ मृत्यु भी बन गई प्रेरणा	आचार्य भद्रसेन	17
7.	आज भी सामयिक हैं, ऋषि दयानन्द	आचार्य डॉ. अजय आर्य	19
8.	सर्वश्रेष्ठ है मानव जीवन	डॉ. ज्ञानप्रकाश	23
9.	पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा	डॉ. भवानीलाल भारतीय	25
10.	अरब शेखों के दुबई से एक चिट्ठी	आचार्य आनन्द पुरुषार्थी	26
11.	Platelets (बिम्बाणु) का असाम्यावस्था	आचार्य डॉ. वेदव्रत आर्य	28
12.	समाचार प्रवाह		33

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक : डॉ. रामकुमार पटेल द्वारा वैदिक मुद्रणालय, छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) पिन-491001 से मुद्रित एवं "अग्निदूत" कार्यालय-छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001 से प्रकाशित, संपादक-आचार्य कर्मवीर शास्त्री मोबा. नं. 8103168424, RNI No.CHH-HIN/2006/17407, डाक पंजी. छ.ग./दुर्ग संभाग/99/2021-23

मेरे राष्ट्र का आधिपत्य ग्रहण करो

वेदामृत

भाष्यकार – स्व. डॉ. रामनाथवेदालंकार

निर्माया उ त्ये असुरा अभूवन, त्वं च मा वरुण कामयासे।
ऋतेन राजन्ननृतं विविञ्चन्, मम राष्ट्रस्याधिपत्यमेहि॥

(ऋग. 10-124-5)

ऋषयः अग्निवरुणसोमाः। देवता वरुणः। छन्दः त्रिष्टुप।

(त्ये) वे **(असुराः)** असुर **(निर्मायाः उ)** माया-रहित **(अभूवन्)** हो गए हैं। (अतः) **(त्वं च)** तू भी **(वरुण)** हे वरुण ! **(मा कामयासे)** मुझे चाह, मुझसे प्रेम कर। **(राजन्)** हे राजन् ! **(ऋतेन)** सत्य से **(अनृतं)** असत्य को **(विविञ्चन्)** पृथक् करता हुआ **(मम)** मेरे **(राष्ट्रस्य)** राष्ट्र के **(आधिपत्यं)** आधिपत्य को **(एहि)** प्राप्त कर।

हे भक्तों को वरण करने वाले वरुण प्रभु ! तुम मुझसे रूठ गये थे। तुम्हारे रुठने का कारण भी मैं जानता हूँ कि मेरे हृदय में आसुरी माया छा गई थी। स्वार्थ, अनीश्वरवाद आदि की मैं गुणों में गणना करता था। नास्तिकता की आसुरी माया के वशीभूत हो मैं सर्वत्र यह घोषणा करता फिरता था कि ईश्वर नाम की कोई वस्तु दुनिया के तख्ते पर नहीं है, न ही एक जन्म से दूसरे जन्म में जानेवाली और कर्मफलों का भोग करनेवाली आत्मा नाम की कोई वस्तु है। मैं प्रभु-भक्त सन्तों का उपहास करता था, आस्तिक दर्शनों की खिल्ली उड़ाता था। मैं न शील की परवाह करता था, न वैदग्ध्य को गिनता था, न शास्त्र का श्रवण करता था, न धर्म को धारण करता था, न त्याग का आदर करता था, न विशेषज्ञता का विचार करता था, न आचार का पालन करता था, न सत्य का अनुसरण करता था, न विद्वानों की पूजा करता था, न गुरुजनों का अभिवादन करता था। इस स्थिति में तुम्हारा मुझसे विमुख हो जाना स्वाभाविक ही था। पर अब आसुरों का सैन्य तितर-बितर हो गया है, उनका माया-जाल विच्छिन्न हो गया है। मेरा चित्त निर्मल हो गया है। अतः तुम भी हे वरुण प्रभु ! मुझे चाहने लगो, मुझसे प्रेम करने लगो।

हे भगवन् ! अब मेरा अपने ऊपर से विश्वास उठ गया है। मैने समझ लिया है कि मेरे हाथ में मेरे राष्ट्र की बागडोर सुरक्षित नहीं है। अब तुम्ही मेरे इस अध्यात्म-राष्ट्र का आधिपत्य स्वीकार करो, हृदय-मन्दिर में सिंहासनारूढ़ होकर ऋत् और अनृत के विवेक-सहित शासन चलाओ। तुम्हारे नियन्त्रण में किसी भी प्रजा के उन्मार्गगामिनी होने का भय नहीं रहेगा, आत्मा, बुद्धि, प्राण, इन्द्रियां, सब सन्मार्ग पर ही चलेंगे। आओ, हे वरुण! मैं तुम्हारे राज्याभिषेक के लिए तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

---

1. कामयासे कामयस्व। कमु कान्तो, लेट् 2. वि विचिर पृथग्भावे, शत्।

सम्पादकीय

सुखमय जीवन का एक ही सूत्र : नैतिकता

सहृदय पाफकों !

*ईश्वर की समस्त कृतियों में मानव धर्म सर्वश्रेष्ठ कृति है। **'बड़े भाग मानुष तन पावा'**, परम्परा के अनुसार चौरासी लाख योनियों में भटकने के बाद मानव-तन मिलता है। ताओ धर्म के संस्थापक चीनी दार्शनिक लाओजे का कथन है कि **"जीवन मनुष्य के लिए ईश्वर का सर्वोपरि उपहार है, इसकी गरिमा इतनी बड़ी है जितनी संसार में किसी अन्य सत्ता की नहीं।"** चण्डीदास का मत है कि **"मनुष्य सबके ऊपर है, उसके ऊपर कुछ नहीं।"** प्रसिद्ध कवि सुमित्रानन्दन पंत ने लिखा है **'सुन्दर है बिहग, सुमन सुन्दर, मानव तुम सुन्दरतम्।'** पं. श्रीराम शर्मा आचार्य ने भी लिखा है- मनुष्य जीवन-स्रष्टा की सर्वोपरि कलाकृति है। ऐसी कायिक और मानसिक सर्वांगपूर्ण रचना और किसी प्राणी की नहीं है। यह उपहार असाधारण है। संस्कृत साहित्य में आया है - **मानुष्यं दुर्लभं लोके**। महर्षि दयानन्द सरस्वती के मतानुसार मनुष्य में ही मननशीलता स्वात्मवत् अन्यों से प्रवृत्ति अन्यायी बलवान् से भी न डहने का सत्साहस धर्मात्मा निर्बल से भी भयवृत्ति हो सकती है। ऐसा कहकर मनुष्य की श्रेष्ठता अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के अन्त में स्वमन्तव्यामन्तव्य में प्रतिपादित की है।*

इन कुछ बरसों में स्पष्ट है कि मानव जीवन बहुमूल्य है। मनुष्य परिश्रमी है अध्यव्यवसायी है, उसमें बुद्धि है, चेतनता है। उसके लिए कुछ भी असम्भव नहीं। संसार में जो कुछ दिखाई देता है, वह मानव की देन है। सृष्टि के आरम्भ से अब तक उसने लम्बी यात्रा तय की है और कष्टों तथा कठिनाईयों को धैर्यपूर्वक आविष्कार और खोजें की तथा कुछ हद तक प्रकृति पर भी विजय पा ली है। संक्षेप में, यदि मानव नहीं होता तो सभ्यता और संस्कृति के क्षेत्र में किसी प्रगति की कल्पना नहीं हुई होती। धरती की बात छोड़िए अब तो मानव ने चांद पर भी ऊर्जा की तलाश शुरु कर दी है।

प्रकृति में हमें दो परस्पर विरोधी चीजें दिखाई पड़ती है जैसे प्रकाश और अन्धकार, दिन और रात, गर्मी और सर्दी। ऐसे ही, मनुष्य भी दो प्रकार के होते हैं. अच्छे और बुरे, सज्जन और दुर्जन, नैतिक और अनैतिक। नैतिकता से युक्त मानव को ही अच्छा और सज्जन कहा जा सकता है तथा अनैतिक मानव बुरा एवं दुर्जन होता है।

संयुक्तांक

नैतिक क्या है और अनैतिक क्या है ? नैतिकता और अनैतिकता से क्या तात्पर्य है ? समाज में सर्वमान्य कुछ स्थापित नियम होते हैं, आचरण होते हैं, परम्पराएँ होती हैं जैसे सत्य बोलना, चोरी नहीं करना, अपने लाभ के लिए दूसरों को क्षति नहीं पहुंचाना, सच्चरित्र होना, शक्ति एवं सत्ता का दुरुपयोग नहीं करना आदि। जो इनका पालन करते हैं वे नैतिक है, जो इनका उल्लंघन करते हैं वे अनैतिक हैं। नैतिक मनुष्य सदा अपने कर्त्तव्यों का पालन करता है और कहीं अपने अधिकारों का दुरुपयोग नहीं करता।

आजकल समाज में नैतिक मूल्यों का तेजी से ह्रास होता दिखाई पड़ रहा है। शासन एवं समाज में सर्वत्र अनैतिकता का आधिपत्य होता जा रहा है। भौतिक सुख-साधनों के अधिकाधिक उपभोग की प्रवृत्ति के कारण नैतिकता गौण हो गई है। छोटे और निजी हित के लिए बड़े सामाजिक हित को त्यागने में थोड़ा भी संकोच नहीं होता यह स्थिति चिन्तनीय है।

यह आम धारणा है कि राजनीति में नैतिकता का कोई स्थान नहीं होता। स्वार्थ पूर्ति के लिए अनुचित साधनों को भी अपनाया जा सकता है। ऐसी राजनीति का जनक आधुनिक काल में इटली के मेकियाबेली को माना जाता है, किन्तु नैतिकताविहीन राजनीति है घातक। इससे साम्राज्यवाद, युद्ध, हिंसा, शोषण आदि को ही प्रोत्साहन मिलता है, सत्य-न्याय प्रबलता पाता है, जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली कहावत चरितार्थ होती है। आज की भारतीय राजनीति इससे भिन्न नहीं है। इसमें वोट, जाति और कुर्सी की प्रधानता है। दलगत राजनीति में सर्वत्र अनैतिकता का बोलबाला है। नेताओं की कथनी और करनी, सिद्धान्त और व्यवहार में एकरुपता नहीं है। घटिया तरीके से धन और शक्ति अर्जित करना ही उसका साध्य बन गया है। जनहित को ताक में रखकर सत्ता के लिए वे टूट पड़ते हैं। सभा-सम्मेलनों में मारपीट, गाली-गलौच, तोड़-फोड़ और छीना-झपटी तो आम बात हो गई है। चुनाव बड़ा हो या छोटा पैमाने का, लोकसभा या विधानसभा का हो अथवा ग्राम पंचायत या किसी स्थानीय संस्था का शान्तिपूर्वक एवं अनुशासित मतदान हो ही नहीं पाता। स्थिति इतनी भयानक हो गई है कि राजनीति से अपराधी भी प्रश्रय पाते हैं, राजनीति का अपराधीकरण हो गया है या फिर यों कहें कि अपराध का राजनीतिकरण हो गया है। इस समय छत्तीसगढ़ समेत पांच राज्यों में चुनाव ही इसकी पूर्व विकृत्तियां दिखाई देने लगी है।

सामाजिक तथा शैक्षणिक क्षेत्रों में भी इसी अनैतिकता का बोलबाला है। बिना रिश्वत के कहीं कोई काम होना सम्भव नहीं। सरकारी तथा गैरसरकारी सभी विभागों में घपलेबाजी है। सेवक अपने स्वामी को भी धोखा देने से बाज नहीं आता। लाखों-करोड़ों का चूना लगा दिया जाता है। अस्पताल में रोगियों के लिए औषधि, दूध-फल आदि जो खरीदना है, उन्हें अधिकारी बाजारों में बेचकर अपनी जेब भरते हैं। औषधि विक्रेता नकली अथवा जाली दवा बेचते हैं। दुकानदार खाद्य-पदार्थों में मिलावट करता है। ग्वाला दूध में पानी मिलाता है। प्रकाशक दूसरों की किताबें चोरी से छाप कर बेचते हैं। यात्री बिना टिकट सफर करते हैं तथा अधिकारी जाली यात्रा-भत्ता का बिल बनाते हैं। जंजीर खींच कर गाड़ी रोक लेना आम बात है। इससे दूसरों को कितनी असुविधा होती है, यह कौन देखता है ? महिलाओं के साथ अमानुषिक व्यवहार, उनका शोषण, दहेज के लिए उनकी हत्या आदि के समाचार रोज ही सुनते हैं। विश्वविद्यालयों में परीक्षा उपहास की चीज हो गई है। स्कूल-कालेजों में पढ़ाई लिखाई होती नहीं, परीक्षाओं में नकल करना विद्यार्थियों का जन्मजात अधिकार हो गया है। जाली प्रमाण पत्र निर्गत हो रहे हैं, केवल पैरवी के आधार पर नौकरियां मिलती है, जिसके लिए काफी बडी रकम भेंट करनी होती है।

धार्मिक क्षेत्र में भी स्थिति ऐसी ही विकृत है। धर्म और नैतिकता के बीच जहां घनिष्ठ सम्बन्ध होना चाहिए, वहां दोनों के बीच खाई दिनोदिन चौड़ी होती जा रही है। सद्विचार और सत्कर्म लुप्त हो गए हैं।

अपवित्रता, कृत्रिमता, आडम्बर और साम्प्रदायिकता ही आज धर्म के प्रतिरुप हैं। धर्म जहां परस्पर प्रेम और भाईचारे में वृद्धि का सूत्र होना चाहिए था, वहां आज दंगा-फसाद, बैर-विरोध और अलगाववाद को बढ़ावा देने वाला हो गया है। पवित्रता तो अब केवल कहने भर को रह गई है, दिल और दिमाग में कहीं उसका अस्तित्व नहीं, तीर्थ स्थानों में भी उसका अभाव है। वहां तो और गन्दगी एवं अनाचार का साम्राज्य है। सफल और सुखमय जीवन के लिए नैतिकता का बड़ा महत्व है। नैतिकता में अद्‌भुत शक्ति है, अनोखा आकर्षण है। नैतिकता जीवन का प्रकाश है और इसके ठीक विपरीत अनैतिकता अन्धकार की कालिमा है। नैतिकता वरदान है, अनैतिकता अभिशाप है। एक मानव के लिए कल्याणकारी है तो दूसरा विनाश का सूत्रपात करने वाला है। हमारे मनीषियों ने स्वर्ग और नरक की जो कल्पना की थी, वह किसी दूसरे लोक में नहीं, इसी पृथ्वी पर ही दोनों विद्यमान है। नैतिक गुणों से युक्त प्रत्येक स्त्री-पुरुष का जीवन शान्ति और सुख का भंडार होता है, सादगी तथा उत्कृष्ट विचारों का प्रतीक होता है और सच्चे अर्थ में स्वर्गिक होता है। किन्तु अनैतिक मानव का जीवन नारकीय होता है। वह उचित-अनुचित का भेदभाव नहीं करन्ता, स्वार्थपूर्ति के लिए गर्हित कुकर्म से बाज नहीं आता और पतन की निम्नतम सीमा तक पहुंचने में कोई आनाकानी नहीं करता।

भौतिकता की चकाचौंध में वह सुखी सम्पन्न होने की साध भले ही पूरा कर लेता है किन्तु जीवन के वास्तविक सुख-शान्ति को वह कभी अनुभव नहीं कर सकता। ऐसे लोग नर नहीं, नरपिशाच हैं और अन्ततोगत्वा नारकीय जीवन जीते हैं। मनुष्य जीवन के साथ अनेक जिम्मेदारियां हैं, मर्यादाएं है, उसकी अपनी सीमा है। केवल मनुष्य के रुप में इस धरती पर पैदा होकर, भरपेट खा-पी कर तथा अच्छे वस्त्र पहनकर वह सुखी और भाग्यशाली नहीं कहा जा सकता। जब उसके चिन्तन और कार्य, सिद्धान्त और व्यवहार नैतिकता से ओत-प्रोत होंगे, तभी उसका जीवन सार्थक और सफल हो सकेगा। उसका व्यक्तित्व विशाल होगा, दृष्टिकोण व्यापक होगा और वह मानव-मात्र से प्रेमभाव रहेगा। सर्वत्र उसे ख्याति मिलेगी, वह सम्मान पायेगा तथा उसका सिर ऊंचा होगा-गर्वोन्नत और वह अपनी गरिमा पर कभी आंच नहीं आने देगा। दुनियां में समय-समय पर नैतिक व्यक्तियों का प्रादुर्भाव होता रहा है। महर्षि दयानन्द, महावीर, बुद्ध, सुकरात, रामकृष्ण परमहंस के नाम उल्लेखनीय है।

जीवन में नैतिकता के गुणों का समावेश करना और बढ़ावा देना अत्यावश्यक है। किन्तु यह ऊपर से दबाव देकर, आदेश देकर अथवा कानून से नहीं होगा। व्यक्तियों के जीवन में बचपन से ही इसका विकास होना चाहिए। बच्चों के शारीरिक तथा मानसिक विकास के पग-पग पर नैतिकता से पूर्ण शिक्षा-पद्धति का होना जरुरी है। पाठ्यपुस्तकों में नैतिक और धार्मिक शिक्षा को उचित स्थान मिलना चाहिए, महापुरुषों की जीवनियां तथा नैतिक आदर्शों से परिपूर्ण कथाओं का समावेश होना चाहिए। अनैतिक तथा अश्लील पुस्तकों के प्रकाशन पर तथा अश्लील फिल्मों के प्रदर्शन पर कड़ा प्रतिबन्ध लगाना आवश्यक है। मादक वस्तुओं का सार्वजनिक रुप से सेवन वर्जित होना चाहिए। बच्चों को प्रारम्भ से ही अच्छी संगति में रहने तथा अच्छी पुस्तकों के पढ़ने का अवसर मिलना चाहिए। बच्चों का प्रारंभिक विद्यालय तो परिवार से ही होता है। अतः परिवार के सदस्यों का और खास-कर माता-पिता का आचरण पूर्णतः नैतिक होना चाहिए। बचपन में जीवन की जैसी नींव पड़ेगी, भावी जीवन की इमारत का निर्माण उतना ही भव्य हो पायेगा। राष्ट्री तथा अंतर्राष्ट्रीय किसी भी क्षेत्र में समाज की गाड़ी नैतिकता के अभाव में आगे नहीं बढ़ सकती। व्यक्ति तथा राज्य दोनों की नैतिकता के स्तर में कोई भेदभाव नहीं रहना चाहिए। यदि ऐसा हुआ तभी विश्व शान्ति की स्थापना में सफलता मिल सकेगी तथा मानव-समाज में परस्पर सहयोग और सद्‌भाव को प्रोत्सान मिल पायेगा अन्यथा नहीं।

– आचार्य कर्मवीर

ज्वलन्त समस्या

हिन्दुओं पर विकट विपत्ति आने वाली है.

- डॉ. रघुवीर वेदालंकार ,
पूर्व प्रोफे. रामजस कालेज

वैसे तो यह कार्य 1947 से ही हो रहा है, या यों कहें कि इससे पहले मुस्लिम राज्य में हिन्दुओं को समाप्त किया गया, उनका धर्मपरिवर्तन व्यापक रुप से किया गया । हिन्दुओं का कत्लेआम किया गया । उनकी सम्पत्तियों पर अधिकार किया गया । हिन्दुओं कन्याओं को बलपूर्वक यातनाओं में डाला गया । यह सब तात्कालिक मुस्लिम शासकों द्वारा किया गया । हिन्दुओं ने भी उनका साथ दिया, ऊंचे पद पर प्राप्त किये ।

इसमें तात्कालिक औरंगजेब, तैमूरलंग जैसे आतंकी सुल्तानों का दोष नहीं है क्योंकि यह सब कुछ कुरान के अनुसार कर रहे थे । उनका धर्म ऐसा ही कहता था तथा अभी भी कहता है कि काफिरों हिन्दुओं को खत्म कर दो, तुम्हें जन्नत मिलेगा । सर्वत्र अल्लाह का राज्य स्थापित कर दो । यही भावना है, जो सब कुछ करा रही है । ये उनके धार्मिक विचार अपनी धार्मिक पुस्तक कुरान पर आधारित है । मुसलमान इसका त्याग नहीं कर सकते । उनका धर्म, उनकी पुस्तक अच्छे हैं या नहीं, मैं इस विवाद में नहीं जाता । इनके पीछे मुसलमानों की दृढ़ आस्था को देखिये । वहां बच्चे से लेकर बूढ़े तक, अशिक्षित से लेकर शिक्षित तक, मजदूरों से लेकर नेताओं तथा देश में उच्च पदस्थ व्यक्तियों तक सभी कुरान के प्रति आस्थावान् हैं। क्या हिन्दू जनसंख्या ऐसी है ? इसका तो कुरान सदृश कोई धर्म ग्रंथ है ही नहीं । वेद धर्मग्रंथ नहीं है । वे तो समस्त संसार के लिए ज्ञान प्रदीप है, किन्तु ये हिन्दु वेदों पर भी कितनी आस्था रखतेहैं । 50% को तो वेदों के नाम तथा स्वरुप का भी पता नही । जिन्हें पता है वे भी वेद के प्रति आदर बुद्धि न रखकर भागवत आदि को महत्व देते हैं । क्या भागवत में शौर्य-वीरता का वर्णन है ? वेद कहता है- विकृत्रस्य इनरूजः । हे धार्मिक वेद भक्त ! तो दुष्ट श्रावकी वृक्षों की ढोड़ी को तोड़ दे । लोक में भी यही कहता है, कि जबड़ा तोड़ दूंगा । हिन्दुओं में न तो ऐसी चेतना है तथा न शौर्य । बस, यही तो वसुधैव कुटुम्बकम् की रट लगायी जाती है । प्रश्न है कि क्या दुष्ट हत्यारों को अपने कुटुम्बकम् में सम्मिलित करोगे ? पहली बात तो वे सम्मिलित होंगे ही नहीं । यदि हो भी तो आपके कुटुम्बकम् को तहस-नहस कर देंगे । क्योंकि, यही उनका धर्म है । हिन्दू क्षमा के सिद्धान्त को श्रेष्ठ मानकर उस पर आचरण करता है, किन्तु क्या सर्वत्र इसे अपनाया जा सकता है ? कदापि नहीं सम्राट पृथ्वीराज ने यही मूर्खता की थी 16 बार हमलावर को छोड़ दिया । उसे तो प्रथम आक्रमण में समाप्त कर देना चाहिए था । जलालुद्दीन (अकबर) को भी क्षत्रियों ने क्षमा दान दिया था, वह इसके योग्य न था । जो व्यवहार उस दुष्ट ने हिन्दू नारियों के प्रति किया, क्या मुस्लिम नारियों के प्रति कोई ऐसा व्यवहार कर सकता है? नहीं, क्योंकि वह हिन्दू जाति क्षमाशील है, सहनशील है यह केवल धर्म का नाम लेती है । उसे भी केवल पूजा-पाठ तक सीमित रखती है, तो क्या ऐसी स्थिति में हिन्दू बचेगा ? ये हिन्दू अपने धर्म पर मर-मिटने को तैयार नहीं है । वास्तविक धर्म यह है कि दुष्टों का खात्मा किया जाय तथा सज्जनों की रक्षा की जाए । भगवान् कृष्ण ने गीता में यही तो कहा था, किन्तु उसके पूजकों ने उसे केवल माखनचोर तथा रासलीला करने वाला बता कर छोड़ दिया । क्योंकि इन धर्म ध्वजियों को स्वयं भी रासलीला करनी है । हमने कृष्ण के सुदर्शन चक्रधारी स्वरुप को याद नहीं किया, क्योंकि हमारा वह प्रतीक नहीं है । हिन्दू क्षमाशील है, सहनशील

है, अहिंसक है। ऐसी जाति दुष्टों का क्या कर पायेगी? यह जाति पापनिवारणार्थ गंगा स्नान करती रहे, मन्दिरों में घण्टे बजाती रहे, चारों धामों की यात्रा करतीरहे, यही इसका धर्म है। समाज तथा राष्ट्र से इसका कोई लेना-देना नहीं। अभी किसी मुस्लिम का फरमान गया है कि कयामत तक भी शरीयत के विरुद्ध कुछ मंजूर नहीं है। मैं इसका प्रशंसक हूं, क्योंकि धर्म ऐसी ही दृढ़ निष्ठा से सुरक्षित रहता है, फलता-फूलता है। क्या हिन्दुओं में अपने धर्म के प्रति ऐसी आस्था तथा संकल्प है ? इन हिन्दुओं की बहादुरी देखिए कि सड़क पर हत्यारा हिन्दू लड़की की निर्मम हत्या कर रहा है तथा लोग अपने घरों से उसे देखकर तृप्त हो रहे हैं। न तो उनका खून खौलता है तथा न ही वे प्रतिकार में कोई पग उठाते हैं। ऐसी जाति का विनाश नहीं होगा तो क्या होगा ? उस हत्यारे को एक लट्ठ से ही समाप्त किया जा सकता था, जो कि कर भी देना चाहिए था। यह भगवान कृष्ण का मार्ग है, उसकी पूजा है। दर्शकों को भय था कि उन पर हत्या का मुकदमा न चल जाए। मुसलमान साहसी प्राणी है, तभी तो वह पुलिस आदि किसी की भी परवाह न करके साहस से ऐसा करता है। मैं उनके साहस का प्रशंसक हूं। वह गलत है, इसमें विवाद नहीं।

मुसलमानों के गुण देखिए - वे कितने संगठित हैं। भारत में ही नहीं अपितु विदेशों तक इसका संगठन सुदृढ़ है। क्या हिन्दू समाज भी ऐसी ही है ? असंगठित जाति आज नहीं तो कल नष्ट हो जावेगी। वह भी तब, जबकि इसमें परस्पर ही एक दूसरे के शत्रु हों। संगठित व्यक्ति/जातियां ही आगे बढ़ेंगी, चाहे उसमें लुटेरे हत्यारे कोई भी हो। यही कारण है कि मुस्लिम धर्म बड़ी तेजी से फैला तथा अब भी वह फल-फूल रहा है, शक्तिशाली हो रहा है। इस संगठन के आगे असंगठित हिन्दु कब तक टिकेगा ?

अब तक यह संगठन चुप था। अबसे दस वर्ष पूर्व यह स्थिति नहीं थी। अगले बीस-पच्चीस वर्षों में स्थिति बदल जायेगी। ये संगठित मुसलमान हिन्दुओं के साथ कैसा व्यवहार करेंगे, यह कश्मीर पंडितों से पूछ लीजिए। संगठन के तो साथ-साथ इनके पास सुदीर्घ योजनाएँ हैं, जिन पर वे लम्बे समय से कार्य कर रहे हैं। इनको सर्वप्रथम योजना में अपनी जनसंख्या बढ़ाने की। वह पूरी हो गयी। हमने हिन्दू को बिल लाकर अपने ही पैरों में कुल्हाड़ी मार ली। अब इनकी योजना राजनीति को कब्जाने की है, यह हो भी रहा है। हिन्दुओं की सभी पार्टियों को जीत के इनकी खुशामद करनी पड़ रही है। देश कहीं जाय, इन पार्टियों को बस, सत्ता चाहिए। तभी तो उद्धव ठाकरे ने स्पष्ट कहा था कि हमें सत्ता चाहिए। बाला साहिब ठाकरे की भावनाओं की परवाह न करके कांग्रेस से हाथ मिलाया। अब कोई भी पार्टी मुसलमान को इसकी सदस्यता के बिना सत्ता प्राप्त नहीं कर सकती। इनका एक उद्देश्य है कि भारत को मुस्लिम देश बनाना है। यहां अल्लाह का राज्य स्थापित करना है। इसके लिए उन्हें चाहे कुछ भी करना पड़े। ओबैसी स्पष्ट घोषणा कर चुके हैं कि भविष्य में भारत की प्रधानमंत्री कोई बुरके वाली महिला होगी। इसके लिए संगठित रुप में प्रयासरत है। वर्तमान राजनीति को इन्होंने वश में कर लिया। वे छद्म के रुप में कन्याओं का अपहरण कर रहे हैं। उनको धर्मान्तरण कर रहे हैं। उनकी हत्या कर रहेहैं। यही नहीं, उन्हें प्रेमजाल में फंसाकर दरिन्दों को बेच रहे हैं। किसी भी पार्टी को इसकी फिक्र नहीं है। सब गद्दी पाने के लिए अपनी-अपनी गोटियां फिट कर रहे हैं। स्वतन्त्र भारत में, हिन्दू बहुल राष्ट्र में यह सब हो रहा है। इससे बढ़कर लज्जा एवं गिरावट की और क्या बात होगी। हम हिन्दू सहनशील है, असंगठित हैं, आपस में टकराते भी हैं। यही हमारा स्वभाव है। यही कारण है कि मकबूल फिदाहुसैन भारत की माता देवी सरस्वती का नग्न चित्र बनाता है, हमें अपमानित करने के लिए। तथापि ये प्रगतिवादी हिन्दू ही उनकी कला की प्रशंसा करते हैं। एक बार मुहम्मद साहब के एक बाल की चोटी की बात चली थी, मुहम्मद के अनुयायियों ने एक जुट होकर क्या हंगामा किया था, स्मरण होगा।

हम हिन्दू हैं, अहिंसक हैं, धर्म ध्वजी हैं, तभी तो कश्मीर से पण्डितों को मार भगाया। उनकी सम्पत्तियों पर कब्जा कर लिया। किन्तु, किसी भी सरकार ने उनके पुर्नवास की व्यवस्था नहीं की, क्योंकि भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है। पाकिस्तान में हिन्दू कन्याओं के साथ जबरदस्ती निकाह, धर्मान्तरण तथा हत्याएं हो रही है, भारत शान्त है। जब भारत में ही यह सबकुछ हो रहा है तो पाकिस्तान का क्या दोष ?

हिन्दुओं के ऊपर तथाकथित हिन्दुओं ने ही प्रहार किया। गांधी जी कुरान पढ़ते थे तथा ईश्वर अल्लाह तेरे नाम का राग अलापते थे। उनके सामने ही मुसलमान तबलीग धर्मान्तरण कर रहे थे, किन्तु गांधी जी ने विरोध नहीं किया। उनके शिष्य नेहरु जी तो उनसे भी आगे बढ गया। हिन्दुओं पर हम तो हमारे दो लाद दिया गया। परिणामस्वरुप हिन्दू एक दो बच्चे तक ही सीमित रहे, जबिक मुसलमान दस-बारह तक बच्चे पैदा करते रहे। माउण्टवेटन को एक बार नेहरु जी ने कहा "I am originally muslim" फिर भी हम नेहरु जी को पं. नेहरु लिखते तथा बोलते रहे, जबकि वे स्वयं नेहरु जी स्वयं ऐसा नहीं मानते थे। वेद में दस सन्तान पैदा करने की आज्ञा है, किन्तु हमें ऐसे वेद से क्या लेना देना। हमें तो नौकरी-पैसा, व्यवसाय चाहिए, राष्ट्र भाड़ में जाए।

मुसलमानों का एक दीर्घकाल के प्रोग्राम है कि काफिरों को खत्म करके अल्लाह का राज्य स्थापित करो। इसके पीछे मुल्ला मौलवी तथा अन्य मुसलमान भी हैं। उनकी योजनाएँ ही फलीभूत हो रही है कि मदरसों में उन्हें कट्टरवाद की शिक्षा दी जा रही है। उनकी लड़कियों ने हिजाब के नाम आकाश पाताल एक कर दिया। लव जिहाद, दुल्हन जिहाद, अपहरण, धर्मान्तरण उसी प्रोग्राम का हिस्सा है, जो फैलता ही जा रहा है। हिन्दू इसे रोक नहीं सकते। हिन्दू कन्याएं सब देखते हुए, कुछ होते हुए भी इनके जाल में फंस रही है। क्या हमारे दोष नहीं है ?

इनका एक अन्य प्रोग्राम देखिए कि हिन्दुओं को डरा-धमकाकर उनकी सम्पत्तियों पर, घरों पर कब्जे किए जाएं। इसके लिए पूरी रुपरेखा बन चुकी है। हिन्दुओं की बड़ी-बड़ी कोठियों की रेकी की जा रही है, जिससे कि अवसर मिलते ही उन पर कब्जा किया जा सके। प्रताप कालोनी की घटना दूरदर्शन पर दिखाई जा चुकी है। ऐसी घटनाओं में इनका हिन्दुओं पर कोई असर नहीं। यह सब होती रही, उन्हें परवाह नहीं। परवाह है तो उन्हें जिन्होंने कि रेकी करके बड़ी-बड़ी कोठियों तक को निशाना बना लिया है, कि इन पर कब्जा किया जायेगा। आप इस बात को हल्के में न लें। वास्तव में पाकिस्तान में यही किया गया तथा शर्म ही नहीं, अपितु डूब मरने की बात है कि कश्मीर में स्वतन्त्र भारत में भी यह किया गया। हमारा किसी का भी खून नहीं खौला। सरकारों की हालत तो आप देख ही रहे हैं।

हिन्दुओं की एक सबसे बड़ी कमी मूर्तिपूजा है। मूर्तिपूजा पर जल चढ़ा कर उसे भोग लगाकर हिन्दू अपने आपको कृतकृत्य मान लेता है। पुरुषार्थ छोड़ देता है। मूर्तिपूजा अकर्मण्यता की जनक है। जर्मन विद्वान गोल्ड स्ट्रकर ने बहुत पहले कहा था कि भारत में इसी प्रकार मूर्तिपूजा होती रही तो अपने एक हजार वर्ष में हिन्दू जाति समाप्त हो जावेगी। ऐसा ही होने वाला है, क्योंकि हमारे सन्त, महात्मा तो बड़े-बड़े आश्रम बना कर लाखों की भीड़ में उपदेश देकर अपना यशोगान करवा रहे हैं। राष्ट्र में क्या हो रहा तथा इसमें उसकी क्या भूमिका होनी चाहिए, इस पर कभी विचार भी नहीं किया जाता। आदर्श के रुप में कहे तो जो भूमिका महाराष्ट्र में समर्थ गुरु रामदास ने कही कि जो भूमिका महर्षि दयानन्द ने अपनाई, उसी में राष्ट्र की रक्षा है। दूसरी ओर देखें कि मुसलमानों के बड़े-बड़े मुल्ला-मौलवी अपने मत को फैलाने में कितनी दृढ़ता से आगे बढ़ रहे हैं। उन्होंने स्पष्ट कह दिया कि शरीयत के सामने कुछ भी नहीं मानेंगे। राजकीय नियम तथा न्यायिक नियम भी शरीयत के सामने कोई कार्य नहीं रखते। उनके लिए शरीयत ही सब कुछ है,

संविधान कुछ नहीं । क्या कभी हिन्दुओं के सन्त-महात्माओं ने अपने सनातन धर्म के प्रति इतनी आस्था एवं दृढ़ता दिखलायी है नहीं, क्योंकि दोनों के उद्देश्य पृथक-पृथक हैं । अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए वे लोग दीर्घकालीन योजनाएँ बनाकर उनकी पूर्ति के लिए पूरे प्राण-प्रण से जुटे हैं । हमारे सन्त-बाबाओं का कोई भी ऐसा सुदृढ़ तथा क्रियाशील संगठन नहीं है । बाबा बागेश्वर जैसे भीड़ जुटा रहे हैं, कलश यात्रा कर रहे हैं, क्या कोई ठोस योजना उन्होंने वर्तमान राष्ट्र के लिए बनाई? आज तो मुस्लिम युवक हमारी कन्याओं का अपहरण, धर्मान्तर तथा कत्ल कर हैं । क्योंकि हिन्दुओं ने इसके प्रतिकार के लिए कोई योजना तैयार की ?

वर्तमान संकट केवल भारतव्यापी नहीं, अपितु, विश्वव्यापी है । फ्रांस को देख ही लिया । खाक कर दिया इन रोहिंग्या मुसलमानों ने । ज्ञान के शत्रुओं ने पुस्तकालय भी नहीं छोड़ा ।

भारत में भी यह हो भी रहा है तथा अगले वर्षों में तीव्रगति से आगे बढेगा । आशंका है कि ऐसी परिस्थिति रही तो 20-25 वर्ष पश्चात भारत में गृह युद्ध छिड़ जायेगा । हालात 1947 जैसे होंगे । जिन रोहिंग्या ने यूरोप की भी नाक में दम किया हुआ है, उन्हें केजरीवाल दिल्ली में बसा रहे हैं, वोटों के लिए । ममतादीदी इनकी सहायिका है, यह पश्चिम बंगाल की हिंसा स्पष्ट बतला रही है । जब राजनीतिक दल भी इनके सशक्त परिवर्धक, पोषक है तथा हिन्दू समाज भी इस ओर से चेतनाशून्य है तो भारतीय हिन्दुओं का भविष्य निश्चित रुप से खतरे में हैं, अभी सोच लीजिए, अन्यथा दुर्दशा हो जायेगी ।

पता : जी-266, सरस्वती विहार, दिल्ली

कुटिल काक.....!

तत् काक ! त्वयि मुक्ता, कटु वाक्य वैवर्ण्य धूर्त्तता शुचिता ।
यदि विष्ठा कृमि पुष्टे, तत्र न दोषा हि तच्चित्रम् ।।

भावार्थ : किसी ने कौवे को धिक्कारते हुए कहा है - (क्योंकि पक्षियों में कौवे को ही धूर्त्त माना गया है) अरे कौवे ! तू अतना फूला क्यों हो रहा है ? आखिर फूलेगा क्यों नहि ? पाखाने के कीड़े ही तो तुने खाये है? पाखाने के कीड़ों को खाकर भी मोटे ताजे बने तुझ में यदि कटुभाषिता, बहुरंगिता, धूर्त्तता और अपवित्रता न आएगी तो भला और क्या आवेगा ? तू ने किया ही क्या है ? जो लिया है, यदि वही संसार के सामने नहीं रखेगा तो कम आश्चर्य की बात नहीं ? यह तो मेरा जन्म-सिद्ध गुण ही है । अभिप्राय, व्यङ्गार्थ यहां बड़ा रोचक निकला है ? कोई सज्जन पुरुष किसी दुर्जन के द्वारा उत्पीड़ित (त्रसित) होने पर व्यञ्जना में कहता है कि- उसका तो स्वभाव ही यही है । भला वह अपने गुण कैसे त्याग सकता है? बुद्धिमान पुरुषों को उचित है कि वह कभी भी नीच व्यक्ति के मुंह न लगे । क्योंकि कहा भी है- **स्थानत्यागेन दुर्जनः** - दुष्ट के कुचक्रों से बचने के लिए मनुष्य को वह स्थान ही त्याग देना चाहिए जहां उसके साथ नित्य सम्पर्क रहता है ।

- सुभाषित सौरभ

आवश्यक है कि हम पृथ्वी-वासी पर्यावरण को दूषित न करें, छिन्न न करें, अन्यथा हमें उनसे अवगुण ही प्राप्त होंगे । यह वैदिक ऋषियों द्वारा प्रस्तुत एक ऐसा सत्य है, जिसकी वर्तमान में अवहेलना कर हम पर्यावर संतुलन को समाप्त करते जा रहे हैं ।

संयुक्तांक

विजयादशमी पर्व पर विशेष

श्रीराम का 'मन्यु'

- मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

हम सब राम को मानते हैं।

अतीत चिरस्मरणीय

अपने अतीत को कभी भी भुलाना नहीं चाहिए। गौरवशाली भूत, वर्तमान को स्वर्णिम बनाने हेतु ऊर्जा प्रदान करता है। वर्तमान में खड़े होकर अतीत को स्मरण करते हुए भविष्य को और अधिक उज्ज्वल बनाने का सतत् प्रयत्नशील होना चाहिए। जो इस मौलिक सिद्धान्त का ध्यान रखकर आचरण करते हैं वे अपना भविष्य स्वर्णिम बनाने में सफल होते हैं।

किन्तु राम की बातें नहीं मानते।

अनेक विद्वानों का यह कथन अत्यन्त सारगर्भित है कि जो इतिहास जितना पुराना होता है वह उतना ही गौरवशाली होता है। विश्व के अनेक देशों में चाहे यह तथ्य सही सिद्ध न होता हो, परन्तु विश्व के इस प्राचीनत देश भारत पर उपरोक्त कथन अकारण सत्य है। ब्रिटिश साम्राज्य के अनेक कूटनीतियों ने भारत में हीनता का प्रभाव प्रचारित करने के लिए हमारे महापुरुषों, भारतीय वैदिक धर्म, संस्कृति सभ्यता, परम्पराओं और रीति-रिवाजों का बड़ा उपहास किया। दर्दजश हमारे ही देश में इन विदेशियों के विचारों के सार्थक कुछ कथित तथा विद्वान उनकी हाँ से हाँ मिलाने लग गये। ऐसे देशद्रोही तत्व शासकों का उच्छिष्टखनि और चाटने में ही अपने भाग्य को सराहने लगे। यहां तक कि अपने उज्ज्वल अतीत, ऋषि-मुनियो तथा महापुरुषों के अस्तित्व से भी इंकार करने में शर्म नहीं महसूस करते। विदेशी भी चाहते थे। प्रो. मेक्समूलर तथा लार्ड मैकाने भी यही चाहते थे। डर्बिन ने सोचने की स्थिति बदल दी।

इन संबंधों में 19वीं शताब्दी में उत्पन्न अनेक मनीषियों जैसे राजाराममोहनराय, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि दयानन्द, महर्षि अरविन्द घोष, लोकमान्य गंगाधर तिलक तथा गांधी ने राम, कृष्ण, हनुमान, सीता, सावित्री, माता कौशल्या, देवकी, मातुश्री का स्मरण कराया। इसके पश्चात् आने वाली पीढ़ी ने इस विषय पर विचार करना छोड़ दिया। इसे एक विडम्बना ही कहेंगे कि हम इन पुरुषों को समय-समय पर याद करते हैं, परन्तु इनके आदर्श, उत्तम आचरण, शिक्षा, उपदेशों पर उचित मात्रा में ध्यान नहीं देते। यह स्मरण हमारा अधूरा है और अपूर्ण है। यह आचरण शुभ नहीं है। यह हीनता की मनोवृत्ति बदली होगी।

हमारी भारतीय आर्य (हिन्दू) जाति का एक विशिष्ट गुण यह है कि एक बार ग्रहण किये ये रिवाज पर्व, उत्सव और समारोह मनाये जाने में एक निरन्तरा बनी रहती है। इस निरन्तरा में समय चक्र के कारण अनेक आवरण आ जाने पर भी रूढ़ियों के रुप में यह पूर्ववत चलते रहते हैं और कालान्तर में उन पर्वों की मूल आत्मा के ऊपर धूलिमा चढ़ जाती है। जाति में नई जागृति और क्रांति लाने के लिए उन पर्वों का मूल तथा वास्तविक कथानक प्रचारित करने का यदि प्रयास किया जाता है तो नवीनता को ग्रहण करने में कोई रूचि नहीं ली जाती। इस सामाजिक सिद्धान्त का मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के कार्य-कलापों से गहरा और अटूट संबंध है। सत्य की तीव्रगति के कारण राम से संबंधी दो घटनाएं आंख मूंदकर जोड़ दी गई है। **(क) अश्विन शुक्ल 10 को भगवान राम ने लंका-नरेश रावण को मार कर विजय प्राप्त की, इस कारण इसी तिथि को विजयादशमी पर्व (दशहरा) मनाया जाता है। (ख) कार्तिक अमावस्या को भगवान राम को अयोध्या में**

प्रत्यावर्तन (लौट आना) अथवा पुनरागमन हुआ था। इसकी खुशी में अयोध्यावासियों ने घी के असंख्य दीपक जलाये थे । तभी से यह दीपावली पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है ।

यह स्मरण रखने योग्य बात है कि भगवान राम का वास्तविक जीवन चरित्र का मूलाधार महर्षि वाल्मीकि रचित वाल्मीकि रामायण है, जो कि उनके ही कार्यकाल में रची गई थी । इस घटना और ग्रंथ की रचना नौ लाख वर्ष पूर्व हुई थी । इसी सन्दर्भ में 15वीं शताब्दी में अकबर के राज्यकाल में हुए सगुणोपासक सन्त तुलसीदास जी ने रामचरित मानस की रचना कर विदेशी मुगलों के अत्याचारों तथा अकबर की धूर्ततापूर्ण कार्यवाईयों से इस विशाल हिन्दू जाति (आर्यों) की अस्मिता की रक्षा की थी । यद्यपि विषय वस्तु की दृष्टि में ये दोनों ग्रन्थ अपने-अपने समय की अति महत्वपूर्ण जाने जाते रहे हैं, परन्तु अधिक प्रमाणिकता के धरातल पर वाल्मीकि रामायण ही मान्यतापूर्ण है । वाल्मीकि रामायण तत्कालीन सामाजिक वातावरण में रची गई थी। इस प्रकार उपरोक्त वर्णित दोनों घटनाओं की सत्यता और मूल्यांकन वाल्मीकि रामायण के आधार पर ही होना चाहिए । सन्दर्भ और विषय-वस्तु के आधार पर हम यहां विजयादशमी पर्याय दशहरा उत्सव की प्रमाणिकता के विषय में अत्यन्त संक्षिप्त रुप से विचार करेंगे ।

बाली वध के पश्चात् सुग्रीव से मैत्री - वर्षा ऋतु की समाप्ति के पश्चात् एक माह की अर्बाध भी समाप्त हो गई । सुग्रीव की ओर से सीताजी की खोज के संबंध में कुछ भी कार्य नहीं हुआ । सुग्रीव के प्रमाद वश यह उपेक्षा हुई । इससेराम और उनके सहयोगियों में चिंता होना स्वाभाविक था । उसे सचेत करते हुए राम ने सन्देश में कहा -

न स संकुचितः पन्था येन बाली पुरा गतः ।
समये तिष्ठ सुग्रीवमा बालिपथ मन्वगाः ॥

(वा.रा.30/11)

अर्थ : सुग्रीव को सचेत करते हुए राम ने कहा- सुग्रीव ! बाली मारा गया जाकर जिस रास्ते से गया है, वह आज भी बन्द नहीं हुआ । इसीलिए तुम अपनी प्रतिज्ञा पर डटे हो । बाली के मार्ग का तुम अनुसरण मत करो । कहते हैं, समझदार को इशारा काफी होता है । यह सन्देश पाते ही वह सहम गया और भयभीत हो उठा । भगवान राम को यह मानसिक आवेश मन्यु था । मन्यु और क्रोध में बड़ा अन्तर होता है । शास्त्रकारों के अनुसार क्रोध एक तामसी मनोवृत्ति है । क्रोध के आवेश में बुद्धि लुम्पित (गायब) हो जाती है । मनुष्य क्रोधाग्नि में लाकर अपनी ही हानि अधिक कर लेताहै । क्रोधावेश में अज्ञान-अंधेरा छा जाता है ।

वही क्रोधी व्यक्ति स्वयं की ही मूल्यवान वस्तुओं को नष्ट कर देता है । उसके क्रोध से चाहे अन्य की हानि न हो, परन्तु वह स्वयं अपनी अपार हानि कर लेता है । क्रोध का ज्वर उतरने पर क्रोधी बहुत पछताता तथा पश्चाताप करता है ।

मन्यु :- इसके आवेग के समय विवेक बना रहता है । किसी भी मूल को सुधारने में वह तत्पर रहता है । उसमें प्रारम्भ से लेकर अन्त तक तेजस्विता बनी रहती है । यद्यपि यह भी एक मानसिक विकार है परन्तु सतोगुणी होने के कारण आप्तजन इसका उपयोग कर पाते हैं ।

हाँ, तो श्रीराम ने मन्यु के माध्यम से सुग्रीव को सचेत कर दिया कि वह समय वानर जाति के लोक रण विजय के लिए सेना, हाथी, घोड़ा, अस्त्र-शस्त्र आदि की तैयारी करते हैं । एक तुम हो जो सम्पट और प्रमादी बनकर अपनी ही जाति की स्वस्थ परम्पराओं की उपेक्षा कर रहे हो । शरद ऋतु आने के बाद भी तुमने सीता की खोज का कोई प्रयास नहीं किया । क्या आप स्वयं अपनी प्रतिज्ञा भंग नहीं कर रहे हो ?

ज्ञायतां सौम्य वैदेही यदि जीवति न वा ।

अर्थ - सौम्य सुग्रीव ! पहिले यह पता लगाओ कि विदेह कुमारी सीता अभी जीवित है अथवा नहीं । इसके बाद सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि यह रावण कौन है तथा उसका देश कहाँ ? इन दोनों समाचार शीघ्रातिशीघ्र देने का प्रबन्ध करें । इसके बाद ही मैं तुम्हारे साथ मिलकर आगे की कार्य योजना बनाऊँगा ।

इन सारी बातों को जानने के लिए माल्यवान

पर्वत पर रहते हुए **स च देशो महाप्राज्ञ यस्मिन् वसति रावणः** श्रीराम ने लक्ष्मण को भेजा। प्रत्युत्तर में सुग्रीव ने कहा – मैंने चारों दिशाओं वानर सैनिक भेजा है। उनकी समयावधि एक माह निश्चित कर दी है। कोई भी वानर 5 रातों से अधिक किसी स्थान पर नहीं ठहर सकता। आप निश्चित रहें। अबी आश्विन मास चल रहा है, अतः कार्तिक मास के पूर्व ही सौम्यपुरुष राम की सारी चिन्ताएं तथा प्रश्नों के उत्तरों से उनका समाधान कर दिया जायेगा।

वाल्मिकीय रामायण के इस कथानक से स्पष्ट सिद्ध हो रहा है कि आश्विन मास से कार्तिक मास की अवधि सीता के अनुसंधान तथा देश–विशेष का निश्चय ही नहीं हो पाया था। यह कितने आश्चर्य की बात है कि इस कथानक को तोड़–मरोड़ कर कार्तिक की अमावस्या को ही भगवान श्रीराम का अयोध्य पुरनागमन तथा विजयोत्सव के उपलक्ष्य में दीप मालाओं द्वारा नगर की सजावट आदि कार्य सम्पन्न होना, किसी बुद्धिमान का निश्चय नहीं हो सकता।

अन्धेनैव नीयमानाः यथान्धाः।

हमारा देश भावना प्रधान होने के कारण भावुक है। श्रद्धा के आधार पर भावुकता की अतिरेक स्थिति में कुछ भी निर्णय लेना बुद्धि सेंगत नहीं होता। उत्तरप्रदेश में रामलीलाएँ खेली जाती है। इनमें उपरोक्त प्रसंग को थोड़ा सा मोड़कर जबकि राम द्वारा दक्षिण की ओर प्रस्थान का प्रसंग था, किसी रामलला संयोजक ने बिना तर्क किये उसे अयोध्या की ओर पुनरागमन से जोड़ दिया और श्रद्धालु समाज भावना वश कार्तिक मास की अमावस्या को ही विजयोत्सवल मानकर दीप मालाएं जलाने लगी।

दूसरे राम को 14 वर्ष का वनवास चैत्र मास से प्रारम्भ हुआ था तो उसका समापन भी चैत्र मास में ही होना संभव है। कार्तिक मास नहीं। अतः विजया दशमी पर्व आश्विन शुक्ल 10 की अपेक्षा चैत्र मास में मनाया जाना चाहिए। इस बिन्दु पर गंभीरतापूर्वक विचार करना आवश्यक है।

पता : सुकिरण, अ/13, सुदामा नगर, इन्दौर म.प्र.

–: कविता :–

युग के रावण की ललकारें

वृत्ति आसुरी बढ़ी हुईआ रावण के युग जैसी,
आझ राम के इस भारत में, बनी व्यवस्था कैसी ?
एक नहीं शत–शत सीताओं का होता अपहरण यहां,
लज्जा लुटती महिलाओं की, नारी धर्म का हरण यहाँ।

0–0

है अन्याय–न्याय का होता, धरती तांडव नर्तन,
भस्मासुर से बड़े हुए असुरों का होता है वन्दन।
मद्यपान हो रहा अभय हो, करता शासन से सहयोग,
करता है बहुमत भारत का, अभक्ष्यखाद्य ही उपभोग।

0–0

मांस–मद्य का सेवन करने से रावण राक्षस कहलाया,
पर नारी पर कुद्दष्टि डालने से रावण का हुआ सफाया।
भ्रष्टाचार बढ़ा है अतुलित, अनाचार का राक्षस हंसता,
पशु–वृत्ति से आच्छादित हो, मानव पशुओं सम हंसात।

0–0

खर–दूषण की सेनाओं का पड़ा हुआ है भू पर डेरा,
अहिरावण ने धरती पर बिखराया घोर अंधेरा।
टकराएगा कौन दनुज से, कौन करेगा, शर–सन्धान ?
किसमें फिर पौरुष जागेगा, कौन उठाएगा धनु–बान ?

0–0

युवक हमारे राम–लखन बन, युग के रावण को ललकारें,
कागज के रावण के बदले, असली रावण को संहारे॥

0–0

– राधेश्याम विद्यावाचस्पति

सद्विचार

आज के बच्चे सुसंस्कारी वातावरण के फलस्वरुप, कल समाज के संचालक और राष्ट्रनायक बनतें है।

वैचारिक

वेद प्रकाश से ही मानवता का विकास सम्भव

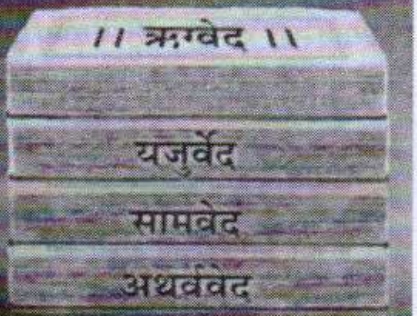

– डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह

महर्षि दयानन्द ने वेद का पुनः प्रकाश कर संसार को अज्ञानता के अन्धकार से प्रकाश ओर लाना चाहा था वह चाहते थे कि संसार एक परिवार की भांति रहे वह तभी सम्भव हो सकेगा जब सभी के हृदय में वेद का ज्ञान होगा और वेदानुसार सभी आचरण करेंगे वैदिक ज्ञान ही मनुष्य को मनुष्य बना सकता है मनुर्भव की भावना वैदिक है प्राचीनकाल में वैदिक धर्म का सर्वत्र प्रकाश था उस समयसभई आपस में प्रेम से रहते थे प्रीतिपूर्वक मिलते–जुलते थे कहीं कोई ईर्ष्या, द्वेष जैसी भावना होती भी थी तो मिलकर समस्या का समाधान कर लेते थे, परन्तु जब से विभिन्न मत मतान्तर बनते गए उनके अलग अलग विचार बनाते गए रहने, खाने–पीने, शादी–विवाह, रीति–रिवाज अलग अलग बना लिए ईश्वर को छोड़ कर पाषाण की मूर्ति स्थापित कर ली अनेक देवी देवता काल्पनिक बना लिए अपने अपने मत की पुस्तक व मत के प्रवर्तक बनते गए परस्पर ईर्ष्या द्वेष व वैमनस्य बट गया।

यवन मत में काफिरों को मारना ही उद्देश्य बना लिया इस्लाम के उदय के बाद चारों ओर लूट–पाट, मत परिवर्तन व बलात्कार तथा हत्याओं का कुचक्र चला। 712 से भारत में भी प्रवेश करके दरिदन्दों ने राष्ट्र में लूट मचाई कत्लेआम किया और जिनका बलात्कार व मत परिवर्तन किया वह मतान्तरित ही आज लुटेरों को अपना पूर्वज कहते नहीं हिचकचते और मतान्तरित उसी क्रूरताव कट्टारता को ग्रहण करते जा रहे हैं तथा षड़यन्त्रों को महत्व दे रहे हैं आज लव जेहाद जैसा षड़यन्त्र भयानक रुप लेता जा रहा है मुम्बई का श्रद्धा हत्याकाण्ड, जिसके टुकड़े दिल्ली में डाले गये, अभी मई के अन्तिम सप्ताह में दिल्ली की बेटी को छुरो से व बाद में पत्थर से गोदा तथा कुचला गया ऐसे अनेक (हत्याएँ) कण्ड हो चुके हैं। यह उन्हीं लुटेरों हत्यारों का अनुसरण है, इसका कारण अमानवीयता, दानवता–क्रूरता का पाठ पढ़ाने वाली शिक्षा ही है जहां घृणा के बीज ऐसे पिशाचों के हृदय में भर दिए जाते हैं।

ऐसे षड़यंत्र भारत में ही क्यों हो रहे हैं, कारण स्पष्ट है उस प्रकार की भावा को उनके हृदय में भरना जो अवश्य ही ऐसे राष्ट्र व समज तथा मानवता के विरोधी दल का प्रभाव व हाथ हो ऐसे दलों संगठनों पर जो राष्ट्र विरोधी है उनको प्रतिबंधित ही नहीं समूल नष्ट कर देना चाहिए उधर लिव इन रिलेशन व समलैंगिक विवाह भी हमारी संस्कृति नहीं एक घिनौना व असामाजिक कृत्य है।

होना तो यह चाहिए था कि स्वतन्त्रता के पश्चात ग्रामों में गुरुकुल एवं संस्कृत पाठशालाएँ होनी चाहिए थी, वेदों का पठन–पाठन होना चाहिए था। अग्निहोत्र का महत्व प्रत्येक के हृदय में होना चाहिए था। विधर्मियों की भी यही शिक्षा होनी चाहिए थी। अपना जो इतिहास था। कत्लेआम–मतान्तरण जिसमें भारतीयों पर अत्याचार हुए थे जो चीखें व चीत्कार वाली मतान्तरितों व उनके परिवारीजनों की दारूण कथा इनकी थी कैसे अत्याचार व इनका दमन हुआ था बताना चाहिए था, उधर वैदिक संस्कृति जो मानवीय व ईश्वरीय गुणों वाली है, उसकी शिक्षा होनी चाहिए थी

उन्हें वैदिक शिक्षा तो मिली नहीं वेद विरुद्ध मजहबों की शिक्षा मिली तो वह कृत्य करेंगे जैसा उनके मन में भरा गया।

अब समाज को यदि ऐसे कुकृत्यों से बचना है, तो वैदिक शिक्षा का प्रत्येक भारतीय के हृदय में बाल्यावस्था से ही पाठ पढ़ाना होगा क्योंकि जब देश एक है तो शिक्षा भी एक ही होनी चाहिए। वह भी ईश्वरीय गुणों वाली मानवता के गुणों वाली समाज व राष्ट्र का उत्थान करने वाली हो नैतिकता का पाठ हो चरित्र का निर्माण हो ऐसी शिक्षा गुरुकुल के अतिरिक्त कहीं कोई हो नहीं सकती।

यही वैदिक शिक्षा थी जो भगवान राम व कृष्ण ने ग्रहण की यही शिक्षा थी जो अर्जुन ने ग्रहण की थी, इसी शिक्षा से हमारे महापुरुष चक्रवर्ती शासक रहे गार्गी मदालसा सीता, घोषा हुई, यही शिक्षा थी जिससे विदुर, सुमन्त, चाणक्य जैसे विद्वान हुए उस समय प्रजा सुखी थी कहीं कोई अत्याचार व्याभिचार नहीं था न्यायपूर्वक शासन होता था। घरों में ताले नहीं लगाते थे। भारत भूमि गौरव पूर्ण धन धान्य से परिपूर्ण रहती थी, हमने बहुत देर कर दी। हमें स्वतन्त्र होते ही वैदिक शिक्षा लागू करनी चाहिए थी, परन्तु अभी भी समय है, समाज व सरकार केवल वैदिक शिक्षा का ही पाठ्यक्रम लागू कर राष्ट्र को उन्नति की ओरले जाएं। राष्ट्र रक्षा हेतु वैदिक शिक्षा आवश्यक है।

पता : चन्द्रलोक कालोनी, खुर्जा

यह सोचना कि मेरे ऊपर कोई निर्भर है तथा मैं किसी का भला कर सकता हूँ, अत्यन्त दुर्बलता का चिह्न है। यह अहंकार ही समस्त आसक्ति की जड़ है और इस आसक्ति से ही समस्त दुःखों की उत्पत्ति होती है। हमें अपने मन को यह भलीभांति समझा देना चाहिए कि इस संसार में हमारे ऊपर कोई भी निर्भर नहीं है। एक भिखारी भी हमारे दान पर निर्भर नहीं। किसी भी जीवन को हमारी दया की आवश्यकता नहीं, संसार का कोई भी प्राणी हमारी सहायता का भूखा नहीं। सबकी सहायता प्रकृति से होती है। यदि हममें से लाखों लोग न भी रहे, तो भी उन्हें सहायता मिलती रहेगी। तुम्हारे-हमारे न रहने से प्रकृति के द्वार बन्द नहीं हो जायेंगे। दूसरों की सहायता करके हम जो स्वयं शिक्षा लाभ कर रहे हैं, यही तो हमारे-तुम्हारे लिए परम सौभाग्य की बात है। जीवन में सीखने योग्य यही सबसे बड़ी बात है। जब हम पूर्ण रुप से इसे सीख लेंगे, तो हम फिर कभी दुःखी न होंगे, तब हम समाज में कहीं भी जाकर उठ-बैठ सकते हैं, इससे हमारी कोई हानि न होगी।

- स्वामी विवेकानन्द

बच्चों पर निवेश करने की सबसे अच्छी चीज हैं, अपना समय और अच्छे संस्कार। ध्यान रखें, एक श्रेष्ठ बालक का निर्माण सौ विद्यालयों को बनाने से भी बेहतर है।

- सम्राट विक्रमादित्य

महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस पर विशेष

जीवन के साथ मृत्यु भी बन गई प्रेरणा

– आचार्य भद्रसेन

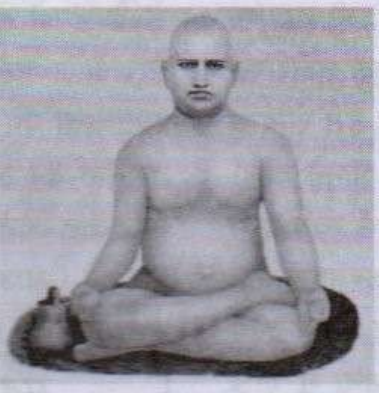

भारतीय परम्परा में अधिकतर महापुरुषों के जन्म दिन मनाये जाते हैं। परन्तु जिन महापुरुषों की मृत्युकिसी विशेष घटना के रुप में घटित हुई है, उनके शहीदी दिवस भी समारोह पूर्वक सम्पन्न होते हैं। महर्षि दयानन्द की मृत्यु स्वाभाविक नहीं थी, वह अपने पीछेएक विशेष पृष्ठ भूमि रखती है। जैसे कि यह बात पूर्णतः स्पष्ट है कि अंतिम दिनों में महर्षि के सारे शरीर पर फफोले पड़ गये थे और उन्हें बहुत बड़ी संख्या में दस्त भी आये थे। डाक्टर के इलाज से रोग उल्टा बढ़ा था। उन दिनों की सारी घटनाएँ महर्षि की मृत्यु को एक योजनाबद्ध षड़यंत्र सिद्ध करती है। जब महर्षि को जोधपुर से लाया जा रहा था, तो मार्ग में एक डाक्टर (लक्ष्मण) अकस्मात् मिला, पता लगने पर उसने इलाज किया, जिससे कुछ लाभ हुआ। उसने महर्षि के पास रहकर उपचार करना चाहा, पर न तो उसका अवकाश स्वीकार किया गया और न ही त्यागपत्र।

महर्षि ने अपने जीवन के अंतिम दिनों जिस प्रकार रियासतों के राजाओं को प्रभावित करना प्रारम्भ किया था और भारतीय जनता पर महर्षि के प्रचार का जिस प्रकार से अमिट प्रभाव पड़ रहा था, इसी के परिणामस्वरुप नवजागृति के साथ भारतीयों को एक सूत्र में पिराने का प्रयास प्रारम्भ हो गया था। वह तात्कालिक विदेशी सरकार को नहीं सुहाया। तब महर्षि के विरुद्ध एक षडड़यंत्र रचा गया, जो कि उनके निधन का कारण बना। अतः महर्षि की मृत्यु की घटना शहीदी पर्व की तरह अविस्मरणीय है। इसीलिए अत्यधिक समारोह के साथ प्रथम निर्वाण शताब्दी का आयोजन होना चाहिए।

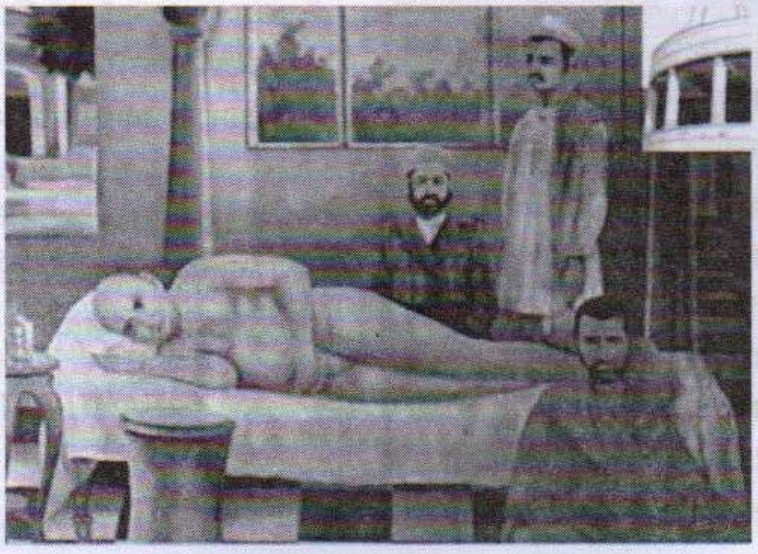

महर्षि के मृत्युकाल को वह घटना–चक्र अपने आप में एक अनूठा प्रसंग है। क्योंकि उसके देखने वाले साधारणजन ही नहीं अपितु बड़े–बड़े डाक्टर भी दंग थे। इतना अधिक शारीरिक कष्ट होने पर भी महर्षि ने बड़ी शान्ति और धैर्य के साथ इस सहा तथा सहर्ष स्वयं मरण को स्वीकार किया। जिसको देख मनीषी गुरुदत्त एम.ए. नास्तिक से आस्तिक बनकर महर्षि के लक्ष्य को पूर्ण करने में अनवरत तत्पर हो गये।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन, विचार एवं कार्य भी अपने आप में एक अनुपम उदाहरण है। उन्नीसवीं शताब्दी में महर्षि ने एक वैचारिक क्रान्ति की। महर्षि के विचार व्यावहारिक, प्रगतिशील, जीवन्त, तर्कसंगत ही नहीं अपितु भारतीय शास्त्रों से प्रमाणित भी थे। अर्थात् जो भारतीय साहित्य और संस्कति सहस्रों वर्षों से विद्यमान थी, परन्तु कुछ ने उसके समग्र स्वरुरप को सामने न रखकर उसका एकांगीपन ही प्रचलित कर दिया। जिसके

परिणामस्वरुप एक ईश्वर के स्थान पर अनेक देवी-देवताओं का पूजन, जन्मना, ऊंचा-नीचापन, सामाजिक छूआछूत, स्त्री शिक्षा का विरोध और अनमेल विवाह आदि मान्यताएँ भारतीयों में प्रचलित हो गयी। महर्षि दयानन्द ने भारतीय शास्त्रों के प्रमाणों को ही उपर्युक्त रूढ़ियों का निराकरण करके जीवन का एक तर्कसंगत जीवन्त, व्यावहारिक रुप उपस्थित किया। इस सम्बन्ध में अधिक लिखने की अपेक्षा हिन्दी भाषा जानने वालों के लिए महर्षि से अपने वाक्य अपने आप में स्वयं परम प्रमाण है। इन वाक्यों विद्यमानता में यही कहना अधिक संगत है, कि हाथ कंगन को आरसी क्या और महर्षि के इन वाक्यों की उपस्थिति में उस सम्बन्ध में कुछ अधिक कहना सूरज को दीपक दिखाना या मुद्दई सुस्त गवाह चुस्त वाली ही बात होगी। जीवन के विभिन्न व्यवहारों के सम्बन्ध में मार्गदर्शन करने वाले थे।

महर्षि के में स्वतन्त्रता प्राप्ति की तड़प उदीप्त हो चुकी थी, अतः विद्याध्ययन के कार्यक्रम को निरस्त करके नर्मदा तट संगठन के कार्य में तल्लीन हो गये। और स्वामी दयानन्द सम्वत 1917 में स्वामी विरजानन्द के पास मथुरा पहुंचे तथा तीन वर्ष तक विद्याध्ययन करके गुरु दक्षिणा ने जीवनदानी बनकर चल पड़े। पहले शैव मतावलम्बी का वैष्णव मत का खण्डन करते रहे तथा इसके पश्चात् शैवमत का भी खण्डन आरम्भ कर दिया। यह परिवर्तन उनके निरन्तर चिन्तन एवं स्वाध्याय का परिणामम था।

दयानन्द यदि चाहते तो समाज से दूरस्थ जंगलों में जाकर घोर तपस्या से मुक्ति को प्राप्त कर लेते, किन्तु देश और समाज की मुक्ति के समक्ष आत्म-मुक्ति की बात उनके लिये बहुत ही छोटी पड़ गयी थी। यही कारण था कि उनका स्वतन्त्र चिन्तन राष्ट्रीय मानस में नवीन प्राण फूंकने का मार्ग खोज रहा था। अपने मार्गानुसन्धान के कार्यकाल में वे सदा-कदा गुरुवर विरजानन्द जी से अवश्य मिल लेते थे। वे निरन्तर जनकल्याण के कार्य में लगे रहे। देशाटन करते हुए वे अपने क्रान्तिकारी विचारों से देश की जनता को अवगत कराते रहे। अन्ततः सन् 1875 में आर्यसमाज की स्थापना स्वामी जी ने की और कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का सूत्र प्रचारित किया। उनके मन में आजादी की तड़प इतनी थी कि उनके ग्रन्थों में स्थान-स्थान में उसक उद्घाटन होता है। आज भले ही वे हमारे बीच नहीं है किन्तु उनके स्वतन्त्रता की रक्षा करने के लिये प्रेरित करते रहे। कार्तिक की अमावस्या को महर्षि का महाप्रयाण हुआ और जाते जाते असंख्य वैदिक धर्मियों का दीप प्रज्वलित कर गये। आओ, ऋषि का दीप बनकर उनके ग्रन्थों का स्वाध्याय कर प्रकाश फैलायें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती

भारत भू के लाल स्वामी दयानन्द सरस्वती
तुम्हारे उपकार जन-जन भूल न पायेंगे।
सोया देश जगाया, हम तो तेरे ही गुण गायेंगे॥

0

छुआछूत ढोंग, आडम्बर, अंधविश्वास
सबका करके खंडन, प्रेम रस बरसाया।
धर्म का सही-सही मर्म को सबको समझाया॥

00

सत्यार्थप्रकाश लिख सत्य की मशाल जलाई।
वैदिक धर्म का डंका पूरे विश्व बजाया।
वेदों की बुझती पुनः जलाया॥

000

संध्या, हवन-यज्ञ का कितना धराधाम को लाभ
घर-घर में यह शुभ संदेश पहुंचाया।
ज्ञान का बिगुल बजा नया सबेरा लाया॥

0000

भारत भू के लाल स्वामी दयानन्द सरस्वती
बहम-भरम लोगों को बाहर निकाला।
राष्ट्र, समाजहित स्वयं पी लिया विष का प्याला॥

- मुकेश कुमार ऋषि वर्मा
गांव-रिहावली, डाक घर तारौली गुर्जर,
फतेहाबाद, आगरा (उ.प्र.) 283111

ऋषि बलिदान दिवस पर विशेष

आज भी सामयिक हैं, ऋषि दयानन्द

– आचार्य डॉ. अजय आर्य
अध्यक्ष – विद्यार्य एवं धर्मार्य सभा
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा

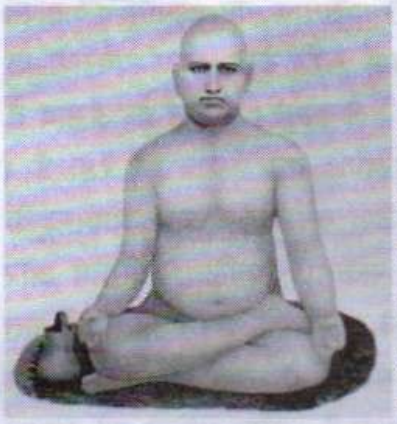

आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व सिद्धार्थ इस धरा पर हुए । उनका हृदय करुणा और मानव मात्र के प्रति प्रेम से भरा हुआ था । वे भ्रमण करने निकले । समाज की अच्छाई और बुराई पर विचार करते थे । वे जिधर जाते उन्हें हिंसा का अराजक वातावरण दिखाई देता था । हिंसा का तांडव हो रहा था । हजारों लाखों पशुओं की बलि चढ़ाई जा रही थी । धर्म के नाम हजारों मूक पशुओं की निर्मम हत्या की जा रही थी । इन हत्याओं को धर्म के ताने बाने में लपेटा जा रहा था। मंदिरों तथा उपासना के पवित्र स्थल रक्तरंजित हो रहे थे । कोई आवाज नहीं उठाता था । सब चुप बैठे थे । सिद्धार्थ साहसी था । तार्किकता और मानवीय संवेदना से भरा चित्त उसे चैन से सोने न देता था । अजीब सी बेचैनी उसे परेशान करती थी । उससे रहा न गया । उसने सवाल करने का निर्णय लिया । उसने आवाज से पूछा समाज के तथाकथित कर्णधारों से पूछा, धर्मध्वजी ब्राह्मणों से पूछा । इस कुत्सित हिंसा और बलि के लिए जिम्मेदार कौन है ? सबने एक ही स्वर में जवाब दिया वेद में लिखा है । यह वेदोक्त कर्म है ।

उस युवक में जोश था, जुनून था । वह करुणा और मैत्री के भाव से भरा हुआ था । वह अनुचित को उचित मानने को तैयार नहीं था । चाहे वह किसी भी धर्मग्रन्थ में क्यों न लिखा गया हो । उसने कहा–जो वेद हिंसा को उचित मानता है, मैं उसे वेद को नहीं मानता । वह वेद के खिलाफ हो गया । वेदपोषित धर्म के खिलाफ हो गया ।

लगभग ढाई हजार वर्ष बाद इस घटना की फिर पुनरावृत्ति होती है । गुजरात के टंकारा ग्राम में तीव्र मेधा संपन्न, प्रेम, दया और करुणा से परिपूर्ण हृदय वाले मूलशंकर का जन्म हुआ । सिद्धार्थ के जीवन में जीवन की चार अवस्थाओं के ज्ञान का जिक्र होता है। मूलशंकर ने भी चाचा और बहन की मृत्यु के रूप में जीवन के उसी सत्य का साक्षात्कार किया । वे मृत्यु को जानकर उससे परे जाने की बात सोचते थे । यही घटना उनके वैराग्य का सोपान बनी । उन्होंने सिद्धों, संतों, तपस्वियों का संग किया । कई–कई दिनों तक निराहार रहे । हिमालय की कंदराओं में तपस्या की । बर्फीली नदियों को पार किया । समाधि में लीन रहे । गुरुवर विरजानन्द की शरण में शास्त्रों का गहन अध्ययन किया । ज्ञान और तप के सर्वोच्च शिखर को छुआ । वे भी अपने करुणापूर्ण चित्त से प्रेरित होकर गुरुदेव की आज्ञा लेकर देश का भ्रमण करने निकल पड़े । तथाकथित ब्राह्मणों का समाज में वर्चस्व था । सती प्रथा के नाम पर स्त्रियों को जिन्दा जलाया जा रहा था । स्त्रियों को पढ़ने का अधिकार न था । बालविवाह, नारी–अशिक्षा, विधवाओं पर अत्याचार, अंधविश्वास, पाखण्ड, जातिप्रथा जैसी न जाने कितनी कुरीतियों ने समाज को जकड़ रखा था । बलिप्रथा के नाम पर रक्त तब भी बह रहा था । इस दृश्य से मूलशंकर (दयानन्द) को हिलाकर रख दिया । मानवीय संवेदना से भरा उनका चित्त बेचैन हो उठा ।

वे रात को उठकर रोते थे
जब सारा आलम सोता था ।।

वही सवाल, जो ढाई हजार वर्ष पूर्व सिद्धार्थ ने उठाया फिर उठा । इस कुत्सित हिंसा और बलि के लिए जिम्मेदार कौन है ? मानव–मानव के बीच ऊंच–नीच की रेखा किसने खींची । नारी को पढ़ने का अधिकार

क्यों नहीं है । सबने एक ही स्वर में फिर वही जवाब दिया – वेद में लिखा है । यह वेदोक्त कर्म है ।

सवाल भी लगभग वही थी । जवाब भी वही था। अंतर था तो मूलशंकर और सिद्धार्थ की प्रतिक्रिया में । सिद्धार्थ ने बिना क्षण गंवाये कह दिया – मैं ऐसे वेद को नहीं मानता, जो समाज को हिंसा की प्रेरणा देता है । मूलशंकर (महर्षि) ने कहा– मुझे दिखाओं तो सही वेद में लिखा कहां है ? मैं वेद का स्वाध्याय करूंगा । वेद पढ़ूंगा, उसका आलोडन करूंगा, मंथन करूंगा, विवेचन करूंगा । महर्षि वेद के खिलाफ नहीं हुए । उन्होंने वेदों को पढ़ा और पाया कि – **वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है** । उन्होंने वेद को इतनी गहराई से पढ़ा कि वे वेदोंवाले स्वामी ही बन गए। वैदिक ज्ञान को विज्ञान से जोड़ने वाले आधुनिक युग में वे प्रथम व्यक्ति थे । अगर दयानन्द नहीं होते तो शायद हम सबके घर में एक सिद्धार्थ होता, जो ऋषि–मुनियों द्वारा पोषित वैदिक धर्म को नकार रहा होता । महर्षि ने न जाने कितने नास्तिकों को आस्तिक बनाया। तर्क संपन्न, आंग्लशिक्षा से प्रभावित मुंशीराम और गुरुदत्त जैसे न जाने कितने युवाओं के मलीन मन को महर्षि के जीवन ने वैदिक आस्था के गंगाजल से परम पावन और प्रेरक बना दिया था ।

महर्षि दयानन्द की सामयिकता

आज गली गली में शराब की दुकानें है । शिक्षा की सजी हुई तथाकथित दुकानों में चरित्र को ताक पर रखा जा रहा है । माँ–बाप वृद्धाश्रम (OLD AGE HOME) की शोभा बना रहे हैं । युवा पीढ़ी अपने सांस्कृतिक मूल्यों से दूर हो गई है । नित नए नए गुरुओं का डंका बज रहा है । देश की जनता को बरगलाकर कृपा का कारोबार किया जा रहा है । आज अगर हम अपनी पीढ़ी को भौतिकता की चकाचौंध में खोते हुए नहीं देखना चाहते तो वे (महर्षि दयानन्द) सामयिक है । आज अगर हम नहीं चाहते कि हमारी पीढी नैतिक मूल्यों से दूर हो तो वे सामयिक है ।

देश के सामने एक बड़ी चुनौती है । अज्ञान, अन्याय और अभाव को दूर करने में हम असमर्थ रहे हैं। अज्ञान से लड़ने वाले ब्राह्मणों का समाज में अभाव है । अन्याय से निजात दिला सकने वाली क्षात्रशक्ति कहीं अदृश्य हो गई है । समाज का अभाव दूर करने वाले वैश्य कहीं दिखाई नहीं देते । वर्णव्यवस्था के बिना इसका समाधान कैसे होगा । अज्ञान के अभाव में अंधविश्वास तथा पाखण्ड का प्रचार हो रहा है । वर्णव्यवस्था के सामाजिक मनोविज्ञान को दयानन्द के बिना समझा नहीं जा सकता । फलित ज्योतिष और कृपा का कारोबार करने वाली की कतार दिन दूरी रात चौगुनी बढ़ रही है । मंदिरों के नाम पर करोड़ों का वारा–न्यारा किया जा रहा है । जिन मंदिरों को समाज सुधार का केन्द्र बनना था, वे अपनी ही रोटी सेंकने में मस्त हो गए हैं । धर्मस्थलों को व्यभिचार तथा व्यसन का केन्द्र बनने में कोई ज्यादा देर नहीं है । भारतीय धर्म तथा अध्यात्म को नीचा दिखाने की नित नई कोशिश की जा रही है । महर्षि दयानन्द के तर्कतीक्ष्ण शरों के बिना इस महायुद्ध में बिजयी नहीं बना जा सकता । वेदादि शास्त्रों तथा तत्पोषित धर्म की रक्षा के लिए महर्षि के विचारों की सामयिकता हमेशा बनी रहेगी ।

जब जब वेदों की सामयिकता तथा उसकी वैज्ञानिक पृष्ठभूमि की चर्चा होगी तब **ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका** की याद जरुर आयेगी । जब धर्म की आड़ में पल्लवित इन विविध सम्प्रदायों, पन्थों के विश्लेषण की गहराई में कोई उतरने का प्रयास किया जायेगा, संस्कारविधि मानव निर्माण के विज्ञान को परिभाषित करती हुई परिलक्षित होगी । मानव व्यवहार के विज्ञान की समझ को जब आगे बढ़ाने की कोशिश की जायेगी महर्षि दयानन्द प्रणीत व्यवहार भानु मानव मनोविज्ञान के आकाश में अपनी किरणें प्रसारित करता नजर आएगा। जब जब समाज सुधारकों की गणना की जायेगी समाज सुधारक महर्षि दयानन्द उस आकाश में चमकते हुए ध्रुव तारे की भांति दिखाई देंगे । महर्षि ने वैदिक ध्वजा लेकर पुरातन ज्ञान के जल से नवीन जगत के क्षेत्र को सींचा है । नारी को अबला से सबला बनाकर उन्होंने गार्गी, दुर्गा, मदालसा और दुर्गा तक बनने का अधिकार दिया । नारी जाति के सम्मान के सच्चे अधिकारी वहीं

है । महर्षि दयानन्द समता तथा सभी के सम्मान के पक्षधर थे । इसलिए उन्होंने ज्ञान और व्यवहार को सम्मान का आधार माना । जाति-पाति का भेद भूलाकर उन्होंने कहा कि हम ईश्वर पुत्र हैं -

श्रुण्वन्तु विश्वे अमृतस्य पुत्राः

वेदादि शास्त्रों के माध्यम से स्वदेश प्रेम का अलख जगाने वाले पहले व्यक्ति थे । उनका मानना था कि **जो स्वदेशी राज्य होता है, वो सर्वोपरि होता है ।** महर्षि दयानन्द सच्चे अर्थों में आधुनिक भारत के निर्माता हैं । धर्म को तर्क की कसौटी पर कसने वाले वे पहले धर्मगुरु हैं । सामाजिक परिवर्तन की दिशा में सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान उन्हीं का है । महर्षि के विचार आज भी आधुनिक है । महर्षि दयानन्द आज भी सामायिक हैं । उनके विचार हमारी तर्कशक्ति को जीवित करते हैं । महर्षि दयानन्द की आंखे हमारा मार्ग प्रशस्त करती है ।

आर्यसमाज का प्रचार कार्य

आर्यसमाज के प्रचार कार्य में पहले जैसा जोश नहीं दीख रहा है । हम बड़े-बड़े सम्मेलनों में उलझे हुए हैं । सम्मेलनों में भीड़ के नामपर आस-पास के आर्यजन जुट जाते हैं । महर्षि दयानन्द की जय बोलकर वापस घर लौट आते हैं । मुझे लगता है कि यह वेद अथवा आर्यसमाज के प्रचार का सार्थक कार्य नहीं है । किसी भी सम्मेलन को तभी सफल मानना चाहिए जब उपिस्थत जन-समुदाय का कम से कम दसवाँ भाग गैर आर्यसमाजी हो । अगर हम अपने से इतर लोगों को नहीं जोड़ पा रहे हैं तो हमें आर्यसमाज के प्रचार के तरीके पर सवाल खड़ा करना चाहिए । प्रचार के लिए बड़ी बड़ी धनराशि की ही जरुरत नहीं होती अपितु छोटे-छोटे कार्यों से वेद प्रचार के कार्य की आधारशिला रखी जा सकती है ।

आर्यसमाज को सामयिक अवसरों पर महर्षि के विचारों पर प्रकाश डालते हुए कार्य करना चाहिए । समाचार-पत्रों और फ्लेक्स के माध्यम से इसे जन-जन तक पहुंचाने की कोशिश की जानी चाहिए । दीपावली आदि बड़े पर्वों पर फ्लेक्स के बैनर तैयार करके आर्यसमाज के निकट मुख्य मार्गों में लगाया जाना चाहिए । आर्यसमाज के बाहर वैदिक विद्वानों की सूची उनके संपर्क दूरभाष संख्या के साथ लगाई जा सके तो अच्छा है । श्राद्धा, नवरात्र. दीपावली, तीर्थस्नान तथा भारतीय पर्वों आदि के अवसरों पर महर्षि दयानन्द के हृदयस्पर्शी वाक्यों का प्रचार किया जाना चाहिए । वैदिक सत्संगों के स्तर को ऊपर उठाने की कोशिश की जानी चाहिए । हम छोटे-छोटे विज्ञापनों में स्वामी जी के विचारों के आधार पर छोटे-छोटे लेख तैयार करके जनता तक पहुंचा सकते हैं । इन प्रयासों में बहुत ही कम खर्च आता है और प्रचार का मार्ग प्रशस्त होता है। वैदिक संस्कारों, यज्ञ, योग आदि के माध्यम से अच्छा प्रचार होता है । आर्यसमाजियों के बीच आर्यसमाज का प्रचार मुझे तो बेमानी लगता है ।

आर्यसमाज को अपने जनोपयोगी सर्वहितकारी सिद्धान्तों तथा कार्यों को आगे ले जाने का कार्य करने की जरुरत है । आर्यसमाज को अपने सत्संगों में आस-पास के विशिष्ट लोगों को भी विशेष अवसरों पर आमंत्रित करके यजमान बनने की प्रेरणा देनी चाहिए । आर्यसमाज अपने विद्वानों तथा धर्माचार्यों का उपयोग भी आर्यसमाज के प्रभाव को बढाने तथा प्रचार करने के लिए कर सकता है । धर्माचार्यों के कर्मकाण्ड से अनेक श्रद्धालु लोग जुड़े होते हैं, उन्हें आर्यसमाज का साहित्य भेंट किया जा सकता है । आर्यसमाज की गतिविधियों से संबंधित विज्ञापन उन तक पहुंचाएं जा सकते हैं । आर्यसमाज के लिए दान भी एकत्रित किया जा सकता है । हम जब दिल्ली में थे तो हमने देखा था कि आर्यसमाज के धर्माचार्य कर्मकाण्ड कराते समय अपने साथ आर्यसमाज की दान-रसीद अपने साथ रखते थे। कर्मकाण्ड और अपनी दक्षिणा के पश्चात् वे आर्यसमाज की रसीद निकालते थे । इससे आर्यसमाज के प्रचार के लिए धन एकत्रित हो जाता था । धन-संग्रह की यह परम्परा मुझे बहुत ही सार्थक लगी । आर्यसमाज अपने ऐसे श्रद्धालुओं, जो सिर्फ कर्मकाण्ड के लिए आर्यसमाज में आते हैं, को भी आर्यसमाज से जोड़ सकता है । ऐसे सज्जनों को **स्वमंतव्यामंतव्य प्रकाश** जैसी

छोटी-छोटी पुस्तकें भेंट की जा सकती है। आर्यसमाज सेक्टर-6 भिलाई विभिन्न अवसरों पर निःशुल्क पुस्तक वितरण का कार्य करता है। वे इसके लिए धन्यवाद के पात्र हैं। इस कार्य को योजनाबद्ध ढंग से प्रभावी बनाया जाये तो ज्यादा उपयोगी होगा। आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर विवाहित जोड़ों को सत्यार्थ प्रकाश वितरित करता है। सत्यार्थ प्रकाश को समझने तथा पढ़ने के लिए बुद्धि तथा मनोभावों का विशिष्ट स्तर अपेक्षित होता है, जो प्रथम बार आर्यसमाज के संपर्क में आने वाले व्यक्ति में नहीं होता। महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों से ओत-प्रोत गृहस्थ जीवन पर लिखी हुई पुस्तकें भेंट की जा सकती है। अगर आर्यसमाज की किसी पत्रिका का वार्षिक सदस्य उन्हें बनाया जाये तो यह आर्य पत्रिकाओं के लिए जीवनदायी भी हो सकता है। सामाजिक सरोकार एवं सेवा कार्य के माध्यम से आर्यसमाज की सकारात्मक पहचान बनाने की कोशिश करनी चाहिए।

आर्य वैदिक सत्संग

आर्य वैदिक सत्संग को भी वेदप्रचार का केन्द्र बनाया जा सकता है। पाखंड और अन्धविश्वास का प्रसार करने तथा गुरुडम फैलाने वाले सत्संगों की भीड़ बढ़ती जा रहीहै। प्रत्येक आर्यसमाज को महीने में एक विशिष्ट वैदिक सत्संग का आयोजन करना चाहिए। इसकी योजना प्रथम सप्ताह में ही तैयार कर ली जानी चाहिए। आस-पास के विशिष्ट आर्यवक्ता को उद्‌बोधन हेतु आमंत्रित किया जाना चाहिए। संभव हो तो माह में आनेवाले विशिष्ट त्योहारों पर्वों में ऐसे आयोजन किये जाएं। इन आयोजनों में सदस्यों को सपरिवार आने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।

आजकल आर्यसमाज में आर्यसमाजी तो हैं किन्तु, आर्यपरिवारों की संख्या धीरे-धीरे सर्वथा समाप्त होती जा रही है। आर्यसमाज अपने धर्माचार्यों को आपस में अदल-बदलकर भी उद्‌बोधन के लिए आमंत्रित कर सकते हैं। दीपावली मिलन, होली-मिलन, आर्य परिवार मिलन समारोह जैसे आयोजनों से परिवारों की भागीदारी बढती है। शहर की आर्यसमाजें आपस में मिलकर शहर स्तर के आयोजन कर सकती है। कोशिश यह की जानी चाहिए कि आयोजन का उद्देश्य अपने सिद्धान्तों का प्रचार तथा अपने संगठन या कार्यक्रम पारिवारिक अवश्य होना चाहिए।

जब जब हम अन्याय के विरुद्ध अपनी आवाज बुलंद करेंगे तब तक ऋषि दयानन्द का शंखनाद हमारा उत्साह बढाएगा। परम्परा तथा सांस्कृतिक मूल्यों की खोज करने के लिए जब जब हमारे कदम बढ़ेंगे तब तब ऋषि दयानन्द का उद्‌घोष वेदों की ओर लौटो हमें सुनाई देता रहेगा। जब जब हम नारी के विरुद्ध होते हुए अन्याय अत्याचार के खिलाफ खढ़े होंगे तब तब ऋषि दयानन्द का

यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवताः

यह गांव यह हमें ऊर्जा से भरता रहेगा। जब जब हम अंधविश्वास पाखंड के खिलाफ उठ कर उनसे मिलने को तैयार होंगे तब तक पाखंड खंडनी पताका हमारा मनोबल ऊंचा करती रहेगी। जब जब अपने प्राचीन शास्त्रों की ओर दृष्टिपात करेंगे ऋषि दयानन्द का व्यवहार से हमारा मार्गदर्शन करता रहेगा। जब जब हम सत्य और असत्य के बीच उहापोह की स्थित में फंस रहे होंगे सत्यार्थ प्रकाश की ज्योति हमें राह दिखाती रहेगी। जब जब हम तार्किक होकर विज्ञान सम्मत बात करेंगे अंधविश्वास ढकोसला और पाखंड से स्वयं को दूर करना चाहेंगे ऋषि दयानन्द हमें अपने पास खड़े दिखाई देंगे।

हम ऋषि दयानन्द को जानते हो या ना हो सत्य को ग्रहण करने और सकते को छोड़ने का जज्बा हमें ऋषि दयानन्द के पास ले ही जाएगा। जब तक सत्य की खोज जारी है, जब तक अंधविश्वास और पाखंड के खिलाफ लड़ाई जारी है। जब तक नारी अस्मिता और उसके सम्मान को बनाए रखने का संघर्ष जारी है, नवीन और पुरातन के बीच स्वयं को श्रेष्ठ साबित करने की होड़ जारी है, जब तक शिक्षा को सर्वसुलभ करने का प्रयास होता रहेगा तब तक ऋषि दयानन्द और उनके विचार सामयिक बने रहेंगे।

- पता - गणपति विहार, बोरसी, दुर्ग (छ.ग.)
मोबा. : 9300540698

उपादेयात्मक

सर्वश्रेष्ठ है मानव धर्म

– डॉ. ज्ञानप्रकाश, सेवानिवृत्त प्रोफेसर,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

भारतीय मनीषियों ने अध्ययन, अनुभव और चिंतन–मनन के आधार पर सुख–शांतिपूर्ण जीवन–यापन की जो जीवन–पद्धति खोज निकाली है, उसको धर्म का नाम देकर दस लक्षणों अथवा कर्त्तव्यों की सीमा में बाँधा गया है। इस दस लक्षणों के नाम इस प्रकार है – धृति (धैर्य), क्षमा, दमन, अस्तेय (चोरी न करना), शौच (पवित्रता), इन्द्रिय निग्रह, बुद्धि, विद्या, सत्य तथा अक्रोध।

धर्मग्रन्थों में कहा गया है **नहि मानवात श्रेष्ठतरं हि किंचित** अर्थात् सृष्टि में मानव से अधिक श्रेष्ठ और कोई नहीं। साथ ही यह भी सर्वसत्य है कि मानव धर्म सब धर्मों का सार है।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा था– सच्ची ईश्वरोपासना यह है कि हम अपने मानव बन्धुओं की सेवा में अपने आप को लगा दें। मानव धर्म वह व्यवहार है जो मानव जगत में परस्पर प्रेम, सहानुभूति, एक दूसरे का सम्मान करना आदि सिखाकर हमें श्रेष्ठ आदर्शों की ओर ले जाता है जिसके अनुसरण करने से सबको प्रसन्नता और शांति प्राप्त हो सके।

धर्म शब्द सम्प्रदाय से भिन्न व्यापक परिभाषा लिये हुए हैं। जहां सम्प्रदाय, उपासना पद्धति, कर्मकाण्डों और रीति रिवाजों का समुच्चय है, वहां धर्म एक प्रकार से जीवन जीने की शैली का ही दूसरा नाम है। सम्प्रदाय एवं मान्यताएँ, देश, काल, क्षेत्र, परिस्थिति के अनुसार रह सकती है किन्तु धर्म शाश्वत–सनातन होता है। सभी मत और सम्प्रदाय मनुष्य के अपने हैं और सभी भव्य हैं परन्तु मानव जाति का कल्याण मानव धर्म के प्राणतत्व के अवलंबन से ही संभव है।

जैसे कि पेड़–पौधे और वनस्पति धर्म निभाते हैं और वे बिना किसी प्रतिरोध के सबको छाया और फल–फूल देते हैं वे किसी से कोई आशा या अपेक्षा नहीं करते। सूर्य अपना सूर्यत्व धर्म निभाते हुए समय से प्रकाश और गर्मी देने में कोई भेदभाव या विलम्ब नहीं करता, ठीक उसी प्रकार हमारा मानव धर्म है जिससे संपूर्ण मानव जाति का सदैव भला होता है। मानव धर्म समस्त कल्याणकारी कार्यों का समुच्चय है जिससे समाज, देश और विश्व लाभान्वित होता है।

गोस्वामी तुलसीदास ने इसी मानव धर्म को संक्षेप में स्पष्ट किया है –

परहित सरिस धर्म नहि भाई।
परपीड़ा सम नहि अधमाई॥

अर्थात परोपकार के समान दूसरा कोई धर्म नहीं और दूसरे को कष्ट पहुंचाने के समान अन्य कोई अधर्म नहीं है।

ईश्वर एक है समूची मानव जाति एक है। मानव का सोते, जागते, उठते, बैठते सर्वे भवन्तु सुखिनः की भावना से ओतप्रोत जीवन ही, मानव धर्म है। जीवन ही, मानव धर्म है। सारे संसार में कोई दुःखी न हो, कोई भूखा न रहे, सबके पास सिर छिपाने के लिएघर रहे, यही तो है मानव धर्म का चरण लक्ष्य। कविवर जयशंकर प्रसाद ने इसी कामना को इन पंक्तियों में व्यक्त किया है –

औरों को हँसते देखो, हँसो और सुख पाओ।
अपने सुख को विस्तृत कर लो–सबको सुखी बनाओ।
मानव धर्म कास्पष्ट सिद्धान्त है– जियो और जीनो दो।

यह ब्रह्माण्ड हमारा है, यह हमारा गर है, यह धरती हमारी माँ है और आकाश हमारा पिता है। यह व्यापक विश्व हमारे लिए है और हम इसके लिए हैं। वृक्ष, पशु–पक्षी, वन, पर्वत, नदी आदि संपूर्ण प्रकृति हमारी सहचर है, जिसका अस्तित्व है। जहां कहीं जीवन है, वहां मानव धर्म का विस्तार है। हमें इनका

संरक्षण, पोषण और संवर्द्धन करना चाहिए।

आज मानव अपने मानव धर्म से विचलित हो रहा है। यह लोभ-लालच में प्रकृति का दोहन कर रहा है और पर्यावरण को नष्ट कर रहा है। भौतिक मोहजाल में फँसकर वह संग्रह एवं दूसरे का भाग हड़पने में लगा हुआ है। आदर्श-पथ से विपथगामी होकर अत्याचार, अनाचार और दुराचार में लिप्त हो रहा है। एक ओर कुछ लोग भूखमरी और कुपोषण के शिकार हैं तो दूसरी ओर अनेक लोग अन्न-धन के भण्डार भरने में लगे हुए हैं। यह विषमता मानव धर्म के अस्तित्व के लिए बड़ी चुनौती है। साधु-संत, विचारक, विद्वान और उत्तरदायी जन इस गंभीर समस्या पर चिंतन-मनन में तत्पर होकर वांछित निदान करें, यह अत्यंत सोचनीय विषय है।

जीवन में दैन्यता, कुटिलता, असुरता जैसी कुप्रवृत्तियों के द्वारा आक्रमण होते रहे हैं, इससे कष्ट और परेशानियां बढ़ जाती है। तो उसका उद्धार करता है मानव धर्म। गीता में दिया हुई ईश्वर का आश्वासन है कि धर्म के प्रति ग्लानि और अधर्म का अभिवर्द्धन होने पर साधुता की रक्षा और दुष्टता का शमन करने के लिए संतुलन स्थापित करने वाली शक्तियों को अवतरित करता हूँ। इस चिन्तन के अनुसार सत्य-शिव-सुंदर भावों से युक्त होकर मनुष्य पशुत्व से ऊपर उठकर क्रमश) मानवत्व, देवत्व और अंत में भगवत्व की कोटि में आता है। अतः आदशों के अनुसार आचरण ही सर्वश्रेष्ठ मानव धर्म है।

जिसके जीवन में मानवता की सुवास होती है, ऐसा जीवन ही मानव-जीवन कहा जाता है। आए दिन समाचार पत्रों में समाचार आते हैं कि बस, ट्रेन, बाढ़, भूकंप की दुर्घटना हुई। आसपास के लोग वहां पहुंच कर घायलों को अस्पताल पहुंचाने के बजाय उनका कीमती सामान लूटने में जुट गए, यह मानवता का घिनौना रुप है। यदि मनुष्य मानव धर्म अपनाएं तो उसका जीवन चमक उठेगा, वह धन्य हो जाएगा। दुःखों को देखकर जिसके मन करुणा का झरना फूट पड़ता है, वही मानव धर्म है। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर ने मानव धर्म को नपे-तुले शब्दों में व्यक्त किया है -

फूलों पर आंसू के मोती, और अश्रु में आशा।
मिट्टी के जीवन की छोटी, नपी-तुली परिभाषा॥

मानव धर्म का आदेश हमारे चिंतन और दृष्टिकोण की व्यापकता के लिए है। मानव जाति की रक्षा, धारण, पोषण, व्यवस्था, समाज में सद्गुणों की वृद्धि-शुद्ध के लिए ही मानव धर्म की अत्यन्त आवश्यकता है। उपनिषदों में स्पष्ट निर्देश है - **त्येन त्यक्तेन भुंजीथः** अर्थात् जिन्होंने त्यागा उन्होंने भोगा और जिन्होंने पकड़ा, वे चूक गए। कबीरदास जी ने भी समझाया है - दोनों हाथ उलीचिए। जितना दान देने हेतु उलीच सकोगे, उतने तुम भर जाओगे।

आज के युग की मांग है - एक नई क्रांति लाने की, जिसमें सब एक होकर मानव जाति के लिए नहीं, अपितु पूरी प्रकृति के लिए प्राकृतिक धर्म निभाने का हम संकल्प लें और अपने अमूल्य समय से थोड़ा समय निकाल कर धन और श्रम को जनहितकारी-प्राकृतिक कल्याणकारी गतिविधि में व्यय करें जिससे जनमानस में जागृति आए और प्रत्येक मानव, मानव धर्म का आचरण करते हुए, परिवार, देश और विश्व का कल्याण कर सके।

सारतः यही सत्य हृदयंगम करना चाहिए --
मानवता की सुरसरि धारा, मानव धर्म।
प्राणिमात्र का एक सहारा, मानव धर्म।
मानस, कर्म और वाणी से करें विनम्र
सदा हित
आदर्शों का खुला पिटारा, मानव धर्म।

परमधाम का द्वार

काम क्रोध और लोभ का, सदा करो तुम त्याग।
कभी किसी भी जीव से, रखो न अनुराग।
रखो न अनुराग, प्रभु का नाम जप कर।
अहंकार व द्वेष-भाव से, दूर रहा कर।

प्रेरणा

पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा

– डॉ. भवानीलाल भारतीय

भारत को स्वतन्त्र कराने के लिए यदि बल प्रयोग करने की भी आवश्यकता हो तो ऐसा करने में हमें संकोच नहीं करना चाहिए। इस महत्वपूर्ण उक्ति को क्रियात्मक रुप में चरितार्थ करने की प्रेरणा देने वाले सशस्त्र क्रान्ति के आद्य प्रवर्तक पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा के विषय में हमारे देशवासियों को जानकारी बहुत कम है। इसका कारण तो यह है कि श्यामजी अपने जीवन के अंतिम 33 वर्ष इंग्लैण्ड तथा स्विटजरलैंड में ही व्यतीत किये और उनकी मृत्यु भी विदेश की धरती पर ही हुई। अतः यहां के लोग उनके विचारों, धारणाओं एवं कार्यों के संबंध में बहुत कम जान पाये। एक अन्य कारणम यह भी रहा कि श्यामजी का राजनैतिक जीवन सैद्धान्तिक अधिक रहा, व्यावहारिक कम। उन्होंने जिन सिद्धान्तों का निरुपण किया उन पर चलने के लिए अन्यों को तो प्रेरित तथा प्रोत्साहित किया, किन्तु स्वयं एक सिद्धान्त–स्थापक आचार्य के रुप में ही रहे। तथापि, यह स्वीकार करना ही होगा कि वीर सावरकर, लाला हरदयाल, मदनलाल धींगरा तथा अनेक क्रान्तिकारियों द्वारा किये गये वीरतापूर्ण कृत्यों के पीछे श्यामजी की अदम्य प्रेरणा कार्य कर रही थी।

यह प्रश्न होता है कि श्यामजी की देशभक्ति तथा स्वतन्त्रता के प्रति उनकी अदम्य इच्छा के पीछे कौन–सी प्रेरणाएं कार्यरत थीं ? जैसा कि हम उनके जीवन चरित्र में देखते हैं, वे अपनी युवावस्था में ही स्वामी दयानन्द के सम्पर्क में आये थे। स्वामी जी से उन्होंने एक ओर तो संस्कृत का अद्वितीय एवं अप्रितम ज्ञान प्राप्त किया तो दूसरी ओर स्वदेशनिष्ठा के दिव्य भावों को भी उनसे ही ग्रहण किया। स्वामी जी के प्रति उनका सम्मानभाव जीवन–पर्यन्त यथावत् रहा और वे अत्यन्त कृतज्ञतापूर्वक उनका स्मरण करते थे। इसी प्रकार इंग्लैण्ड में रहकर अध्ययन करते समय, तथा बाद में स्थायी रुप में वही बस जाने पर, वे यूरोप के महान् चिन्तकों और दार्शनिकों के उदार विचारों से भी प्रेरणमा ग्रहण करते रहे। मिल और स्पैन्सर के विचारों का उन पर अमिट प्रभाव था।

श्यामजी के जीवनीकारों को ध्यान करके जीवन के अन्य पहलू की ओर भी गया है। धन के प्रति उनका प्रबल आकर्षण, वित्तोपार्जन की उनकी अदम्य लालसा तथा सांसारिक सुख–सुविधापूर्ण जीवनयापन की प्रबल इच्छा, क्या उन्हें उन क्रान्तिकारियों के गुरु या अनुशास्ता का पद ग्रहण करने का अधिकार देती है, जिन्होंने देश की स्वतन्त्रता के लिए तिल–तिल कर अपनी आहुति दी थीतथा स्वाधीनता यज्ञ में सर्वस्व होम दिया था ? निश्चय ही श्यामजी का जीवन तिलक, अरविन्द और लाला लाजपतराय के सक्रिय राजनैतिक जीवन से तो भिन्न है ही, वे सावरकर, भगतसिंह तथा बिस्मिल जैसे उन क्रान्तिकारियों की कोटि में भी नहीं आते जिन्होंने अपने घर–परिवार, यहां तक कि शरीर को भी मातृभूमि के कष्टों का निवारण करने के लिए समर्पित कर दिया था। तथापि, श्यामजी का भारत की सशस्त्र क्रान्ति–चेष्टा का पितामह कहना अत्युक्ति नहीं है। वे ही प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने हर्बर्ट स्पैन्सर के शब्दों को उद्धृत करते हुए सर्वप्रथम कहा था–

"अत्याचार का प्रतिकार करना न्यायोचित ही नहीं, अपितु आवश्यक भी है। अत्याचारों का अप्रतिकार लोकहित के साथ साथ स्वाभिमान का भी विघातक है।" जहां तक एक ओर उन्होंने विदेशी सत्ता को हटाने के लिए बल–प्रयोग तथा शस्त्र ग्रहण करने के औचित्य को स्वीकार किया, दूसरी ओर यह भी कहा कि यदि हम विदेशी शासन के साथ सब प्रकार का असहयोग करें तो इसका एक दिन टिका रहना भी असंभव हो जायेगा। इस प्रकार श्यामजी ने ही महात्मागांधी से पूर्व असहयोग, असहकार, सत्याग्रह तथा सविनय अवज्ञा आदि की धारणाओं को प्रकट किया।

पता – श्रीगंगानगर, राजस्थान

पाती-परदेशी

अरब शेखों के दुबई से एक चिट्ठी

– आचार्य आनन्द पुरुषार्थी

अपनी सत्रहवीं विदेश यात्रा के दूसरे चरण में Kenya Airways के विमान से मारीशस से नैरोबी और पुनः 6 घंटे यात्रा कर 21 अगस्त की रात्रि 11 बजे हम दुबई के वैभवशाली एयरपोर्ट पहुंचे । पश्चिम एशिया के मध्य अरब प्रायद्वीप के पूर्वी छोर पर स्थित सात छोटे देशों को संयुक्त अरब अमीरात यूएई कहते हैं । अबूधाबी इनकी राजधानी है । प्रत्येक अमीरात एक शासक द्वारा शासित होता है ये सभी मिलकर एक राष्ट्रपति का चुनाव करते हैं । आबूधाबी के शासक श्री मोहम्मद बिन जायद राष्ट्रपति व दुबई के शासक श्री मोहम्मद बिन राशिद सभी सातों अमीरात के प्रधानमंत्री व उपराष्ट्रपति भी हैं । यू.ए.ई. का संयुक्त क्षेत्रफल 83600 वर्ग किलोमीटर है जो अरणाचल प्रदेश के बराबर है ।

ब्रिटिश अंग्रेजों ने इस 2 दिसम्बर 1971 को स्वतन्त्र किया । जनसंख्या लगभग एक करोड़ है । जिसमें 85 लाख प्रवासी हैं और उनमें 51% भारतीय 15% पाकिस्तानी, 10% बांग्लादेशी व ईरानी आदि हैं । 675000 बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के कामगार के कारण दुबई सहित इन अमीरातों में उच्चतम विकास दिखाई देता है । यूरोप की तकनीक तेल भंडार से, प्राप्त धन व भारत सहित अनेक देशों के प्रवासियों के अथक परिश्रम से निर्मित चकाचौंध पूरे विश्व के पर्यटकों को यहां आकर्षित करती है । शासकीय भाषा अरबी है परन्तु अंग्रेजी, फ्रेंच, हिन्दी आदि भी बोली जाती है । विश्व स्तर के शिक्षा संस्थानों से सभी प्रकार की उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं । स्थायी नागरिक कोई भी निर्धन नहीं है या तो धनी है या अतिधनवान हैं । व्यापार में इनको साझीदार बनाना आवश्यक है बिना कुछ किये करोड़ों रुपये उसे मिल जाते हैं । स्थायी नागरिकता किसी को प्रायः नहीं दी जाती है । बाहरी प्रवासी पहले तो संपत्ति भी नहीं खरीद सकते थे पर अब अपराध शून्यता व वैलासिक सुविधाओं के चलते विश्व भर के ऐश्वर्यशाली जन घर खरीदने को उद्यत रहते हैं, अतः सम्पत्ति बहुत महंगी है । आयकर बिल्कुल भी नहीं है अतः नागरिक प्रसन्न रहते हैं । परन्तु सरकार किसी भी त्रुटि पर बहुत ज्यादा आर्थिक दंड लगाकर व पर्यटकों से विभिन्न प्रकार के चार्ज लगाकर इसकी पूर्ति कर लेती है । अगस्त 2010 में हमम यहां वेद प्रचारार्थ आ चुके हैं । इस बार 6 दिन के स्वल्प प्रवास पर आना हुआ । तीन परिवारों में पृथक् पृथक् यज्ञोपदेश का सौभाग्य प्राप्त हुआ । दो परिवारों में वैदिक ईश्वर के स्वरुप, वेदों के अवतरण, कर्म सिद्धान्त, मांसाहार, मूर्तिपूजा पर प्रवचन व शंका समाधान किया । दैनिक अग्निहोत्र सिखाया व स्वाध्याय की विशेष प्रेरणा दी । उच्च शिक्षित नव पीढ़ी को लगातार प्रेरित करना अत्यंत आवश्यक है अन्यथा अंधविश्वासों की ओर भटकने व कदाचित धर्मच्युत होने की संभावना रहती है । जून से सितम्बर तक यहां प्रचंड गर्मी रहती है अतः 40 व कई बार 50 डिग्री तक तापमान हो जाता है । मार्ग में बस स्टाप वातानूकूलित बने हैं प्रत्येक घर में ए.सी. रखना विवशता है । बरसात बहुत ही कम प्रायः नहीं होती है। अबूधाबी में 82 गुंबद वाली शेख जायद की विशाल मस्जिद Ferrari World Yes Island, भयोत्पादक मनोरंजक खेल, स्वर्ण प्रयोग से निर्मित कालीन प्रदर्शनी, Emirates Palace, Heritage Village तथा दुबई में 828 मीटर विश्व की

सबसे ऊंची इमारत बुर्ज खलीफा, समुद्र को प्रपूरित कर बनाया द्वीप Palm Jumeirah तथा उसमें अटलांटिस वाटर पार्क उसके मनोरंजक खेल, Global village, Dubai Aquarium and Under Water zoo, कृत्रिम बर्फ़ से निर्मित snow world व उसके खेल, पैंग्विन की उपस्थिति, फ्रेम आकार के 150 मीटर ऊंचे भवन से दुबई दर्शन, 236 मीटर की ऊंचाई के काँच भवन पर चलना sky View Tower, डॉल्फिन शी लायन पक्षियों के कतब आदि दर्शनीय है। आज रात स्पाइसजेट के विमान से दिल्ली पुनः जमुई (बिहार) के तथा तिजारा (अलवर) राजस्थान के कार्यक्रम के उपरांत 8 सितम्बर को नर्मदापुर पहुंच कर आपसे विस्तार से चर्चा हो सकेगी।

आर्यसमाज मंदिर से निकटता बनाये रखे। स्थानीय आर्य विद्वानों से स्वाध्यायार्थ पुस्तकें लेते रहें तथा शंका समाधान भी करते रहे। अपनी संतान पर सतर्क दृष्टि रखें।

तन है मिट्टी का सांसे भरी उधार है।
घमंड किस बात का प्रभु,
प्रभु के घर में हम सभी किरायेदार हैं।

पूर्व दिशा से अरुण रश्मिया लेकर
अपने भिन्न भिन्न रुप दिखलाती
आती है उषा।

सूर्य के स्वागत के लिए रात्रि का
तम चीरकर प्रकाश को फैलाती हुई
आती है उषा।

नन्ही कन्या की भांति राग द्वेश से
दूर सब पर सम भाव रख
चारों दिशा में छा जाती है उषा।

बुराईयों को दूर कर अच्छाइयों को
दर्शाती माता की भांति
सबको जगाती है उषा।

स्वयं दीप्त हो ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेंद्रियों में
शक्ति का संचार कर सबको प्रकाशित
करती जाती है उषा।

उषा से प्रकाश धन लेकर जीवन को
उज्ज्वल बनाकर निरभिमानी,
उत्साहित होकर चारों और फैला दो
जीवन की आशा।

कमलेश आर्या, भिलाई

आयुर्वेदामृत

Platelets (बिम्बाणु) की असाम्यावस्था

– आचार्य ड़ॉ. वेदव्रत आर्य
सेवानिवृत्त–आयुर्वेद चिकित्सा अधिकारी

अस्पतालों में भरती रोगियों के घबराये हुए परिजनों के मुख से बहुधा सुनने में आता हा कि रोगी के रक्त में प्लेटलेट की कमी है, बहुत कोशिश करने पर भी नहीं बढ़ पा रहा है, इत्यादि। Platelets Donner आसानी से न मिलने के कारण डाक्टर्स भी प्रायः परेशान दिखाई देते हैं, क्योंकि एलोपैथी में Platelets transfusion के सिवाय अन्य कोई उपाय नहीं है। कुछ डाक्टर्स के अनुसार platelets transfusiion से रोगी को कुछ बड़े खतरों का सामना करना भी पड़ सकता है, हेमोलिटिक रिएक्शन होने से तो मृत्यु की भी सम्भावना रहती है। आइये जाने प्लेटलेट्स क्या है ? Platelets Donner उपलब्ध न होने पर आयुर्वेद के अनुसार इसे कैसे घटा या बढ़ा सकते हैं ?

प्लेटलेट्स क्या है ? :– मानव शरीर में लगभग 5 से 6 लीटर तक रक्त की मात्रा होती है, इसी रक्त में एक प्रकार की सूक्ष्म कोशिकाएं होती हैं, जो रक्त में थक्का बनाती है, इन्हीं कोशिकाओं को प्लेटलेट्स या बिम्बाणु कहते हैं। ये कोशिकाएं रक्त में बनती बिगड़ती रहती है।

प्लेटलेट्स के कार्य :– एक व्यक्ति के शरीर में लगभग 1.5 से 4.5 लाख तक की मात्रा में होती है, इतनी मात्रा की स्थिति में रक्तावाहिकाओं में रक्त का संचरण उचित रीति से होता है तथा शरीर में कहीं चोट, खरोंच या त्वचा के कट–फट जाने से शरीर से बाहर होने वाले रक्तस्राव का रक्त लगभग 3 मिनट में सूखकर रक्तस्राव बन्द हो जाता है, इस कार्य को सम्पादित करने का कार्य ये प्लेटलेट्स ही करते हैं साथ ही क्षतिग्रस्त कोशिकाओं को भी ठीक करती है। इसका वैज्ञानिक नाम Homeostasis है इसका निर्माण bone marrow (अस्थिमज्जा) में होता है।

जब इनकी संख्या घटकर 1.5 लाख से कम हो जाने की स्थिति को एलोपैथी में Thrombopenia कहते हैं, इस स्थिति में रक्त अत्यधिक पतला होकर आँख, कान, नाक, मसूढ़ों, मूत्रमार्ग, गुदामार्ग, महिलाओं के आर्तव काल में या चोट–खरोंच लग जाने त्वजा के कट–फट जाने पर शरीर से बाहर निकलने वाला रक्त किसी भी प्रकार से बन्द होना असम्भव हो जाता है, आन्तरिक रक्तस्राव भी हो सकता है। सम्पूर्ण शरीर में जगह–जगह चकते पड़ जाते हैं जिनका रंग लाल या बैगनी होता है। ऐसी आवस्था में ऐलोपैथिक डाक्टर्स अविलम्ब लगभग 2 यूनिट platelets transfusion करते हैं। इसकी मात्रा अत्यधिक कम (30 से 10 हजार तक) हो जाता है तब मनुष्य के लिए यह स्थिति मारक हो जाती है।

प्लेटलेट्स की मात्रा में कमी :– शरीर में लौह तत्व की कमी, Leukemia (श्वेत्रक्ताभ), सिरोसिस, Chicken-pox (छोटी माता), गर्भावस्था, एच.आई.वी. एड्स, Aplastic Anemia (अविकसित अरक्तता), कीमोथैरेपी, अत्यधिक मद्यपान, विटामिन बी 12 की कमी, रक्त में जीवाणु–संक्रमण जैसे डेंगू, मलेरिया, चिकनगुनिया, diclofanac, Asprin

Brufen जैसी कुछ विशेष ऐलोपैथिक औषधियां और अस्थिमज्जागत समस्या होना से प्लेटलेट्स की मात्रा में कमी होने की सम्भावना होती है।

प्लेटलेट्स की मात्रा अधिक होना :- इसी प्रकार इन कोशिकाओं की मात्रा में अत्यधिक वृद्धि (4.5 लाख से ऊपर) हो जाने की स्थिति को (Thrombocytosis) थ्रोम्बोसाइटोसिस कहते हैं। चूंकि प्लेटलेट्स का निर्माण मज्जा में होता है अतः जब मज्जा में असामान्य कोशिकाएं होती है तब उसे प्रायमरी थ्रोम्बोसाईटोसिस कहते हैं, जब किसी बीमारी जैसे पीलिया, कैंसर, सूजन आदि या अन्य किसी कारण से इसकी मात्रा बढ़ती है तब उसे सेकेण्डरी थ्रोम्बोसाईटोसिस कहते हैं, प्लेटलेट्स बढ़ने का एक कारण अत्यधिक मानसिक तनाब भी होता है। ऐसी स्थिति में रक्त की सान्द्रता (गाढ़ापन) बढ़ जाती है, जिससे रक्तवाहिकाओं में रक्तसंचार में बाधा उत्पन्न होती है, अत्यधिक सान्द्रता की स्थिति में रक्त थक्के बनने लगते हैं, जिससे हृदय रोग, वृक्क (kidney) का क्षतिग्रस्त, पक्षाघात आदि के अतिरिक्त डिम्बाशयार्बुद (Overian Cancer), फुफ्फुस (lungs) का कैंसर, अंतड़ियों का कैंसर और स्तन कैंसर होने की भी सम्भावना रहती है। कभी-कभी अत्यधिक उच्च मात्रा के कारण Thrombopenia की तरह छोटी सी चोट अथवा बिना चोट के भी स्वतः धमनियों से रक्तस्राव हो सकता है।

चिकित्सा :- Thrombopenia (बिम्बाणु अल्पता) में प्लेटलेट्स बढ़ाने हेतु :-

(1) पपीते के पत्तों में रक्तरोधक क्षमता होती है और वह प्लेटलेट्स की संख्या में वृद्धि करता है अतः निम्न प्रकार से लगभग एक सप्ताह तक प्रयोग कर सकते हैं अधिक दिनों तक या अधिक मात्रा में उपयोग करने से हानिकर भी सिद्ध हो सकता है :- पपीते के पत्तों का रस 10ml., गिलोय स्वरस 10ml., काली मिर्च के 2 दानों का चूर्ण सभी को मिश्रित करके प्रातः उषाकाल में निराहार दिन में केवल एक बार सेवन करना चाहिए।

(2) गिलोय का डंठल 50 ग्रा., नीम के पत्तों की सींक (बिन पतो के) 2 नग, काली मिर्च के 2 दाने तुलसी पत्र 4 नग, सबको पीस छानकर 100ml. पानी मिलाकर सुबह शाम लेना चाहिए। (इन सबका काढ़ा बनाकर भी लिया जा सकता है)।

(3) गिलोय का घनसत्व या गिलोय वटी 100 या, लौह भस्म 10 ग्राम, अभ्रक भस्म 10 ग्राम, स्वर्णमाक्षिक भस्म 6 ग्राम सबको गिलोय स्वरस या पानी में अच्छी तरह घोंटकर 250-250 मि.ग्रा. की गीली बना लें। (पपीते के पत्तों के स्वरस की भावना देने पर अधिक प्रभाव होगा)।

अपथ्य (परहेज) :- प्लेटलेट्स की संख्या में कमी होने के जो कारण ऊपर बताए गए हैं, उन्हें अपथ्य समझना चाहिए।

पथ्य :- आंवला, चुकंदर, नींबू, कद्दू, पालक की सब्जी, दूध।

Thrombopenia (बिम्बाणु बहुलता) में प्लेटलेट्स कम करने हेतु :-

(1) लहशुन या अदरक या दोनों को मिलकर चटनी बनाकर 1 से 2 चम्मच तक प्रतिदिन निराहार धीरे-धीरे चाटकर खाना चाहिए।

(2) ताम्बूल (पान) का रस 10 मि.ली., अदरक का रस 10 मि.ली. और मधुरस 20 ग्रा. मिलाकर धीरे-धीरे चाटकर प्रतिदिन खाने से प्लेटलेट्स की संख्या कम होगी।

पथ्य :- अनार, सन्तरा तथा साग-सब्जियों और चाय में दालचीनी का उपयोग करना चाहिए।

पता : वेद मन्दिर सोंठी (सक्ती), जिला-सक्ती (छ.ग.) मोबा. नं. 7566353498

सफलता विज्ञान का वो सातवां सूत्र है, जिसके बिना, मनुष्य का जीवन पशु समान है। बिना ज्ञान-विज्ञान, मनुष्य का जीवन अधूरा है।

"दिव्यपर्व"

– आचार्य विश्वामित्र भारद्वाज

दीपावली का दिव्य पर्व है, जग सारा दीपों का उजाला,
जीवन को भी जगमग बना दो, शुभ्र ज्योति निराला ॥ (पद)

सत्य अहिंसा स्नेह प्रेम की, ज्योति जन-जन में बिखराओ,
हिंसा, ईर्ष्या, घृणा, लोभ औ, मात्सर्य का तिमिर हटाओ ।
पहन लो आशु प्राचीन अतीत, गौरव यश की पीयूष माला ॥1॥

-0-

केवल अपना उदर भरण पोषण, यह पशुओं की रीति,
मानवों का धर्म परस्पर, सहयोग और मैत्री प्रीति ।
देवों का परोपकार श्रेष्ठव्रत, करे सारा विश्व उजियाला ॥2॥

-0-

यह न भूलो विश्ववारा प्रथमा, संस्कृति का देश है भारत,
अविद्या तिमिर ग्रस्त हो अद्य, डूबा है भारत, लक्ष्य है स्वास्थ्य ।
दिव्यता शालीनता समन्वित, भव्य जीवन कर दिया है काला ॥3॥

-0-

'अयं बन्धुरयं ने ति' नीति मूढ़ चेता की नीच कामना,
'वसुधैव कुटुम्बकम्' उद्देश्य, महलों की उदात्त चेतना ।
आत्मा का मिलान विश्वात्मा से, फैले निर्मल ज्योति ज्वाला ॥4॥

-0-

निःस्वार्थ दृढ़ संकल्प धारो, मृदुल मंजुल जीवन कुन्दन,
तोड़ देंगे कुशलतापूर्वक, दुःखी भारत माँ का बन्धन ।
शोक दुर्गति तिमिर मिटे, जय शिव ज्योतिर्मय जीवन दाता ॥5॥

-0-

सुनो सुनो प्रिय भ्रातागण मम, अन्तर व्याकुल व्यथित वाणी,
यह न समझो तुम्हें, सुनाऊं कपोलकल्पित गढ़त कहानी ।
जगद्गुरु ये हमारे पूर्वज, 'हम भी हैं' यह जप लो माला ॥6॥

दीपावली का दिव्य पर्व.

संयुक्तांक

रजिस्ट्रार, फर्म्स एवं संस्थाएं, छत्तीसगढ़ के उक्त आदेश के परिपालन में संस्था की ओर से दिनांक 01.08.2022 को प्रस्तुत धारा 27 की जानकारी जिसमें कार्यकारिणी का निर्वाचन दिनांक 24.07.2022 होना अंकित है को ग्राहय कर रिकार्ड में दर्ज किया जाता है, जिसमें निम्नानुसार पदाधिकारियों के नामों का उल्लेख है :–

कमांक	पदाधिकारी का नाम	पदनाम
01	श्री डॉ. रामकुमार पटेल	प्रधान
02	श्री रामनिवास गुप्ता	उपप्रधान
03	श्री धरणीधर आर्य	उपप्रधान
04	श्री वेदब्रत आर्य	उपप्रधान
05	श्री लक्ष्मी नारायण महतो	उपप्रधान
06	श्री रमेश कुमार साहू	उपप्रधान
07	श्री अवनी भूषण पुरंग	मंत्री
08	श्री रवि आर्य	उपमंत्री (कार्यालय)
09	श्री कपिल देव शास्त्री	उपमंत्री
10	श्री राजकुमार वर्मा	उपमंत्री
11	श्री ताराकांत प्रधान	उपमंत्री
12	श्री भागवत राम साहू	उपमंत्री
13	श्री जगबंधु आर्य	कोषाध्यक्ष
14	श्री राधेश्याम गुप्ता	पुस्तकाध्यक्ष
15	श्री रामेश्वर आर्य	अंतरंग सदस्य
16	श्री लेखनकार आर्य	अंतरंग सदस्य
17	श्री हेमसागर आर्य (हेम मुनि वानप्रस्थी)	अंतरंग सदस्य
18	श्री चितरंजन पटेल	अंतरंग सदस्य
19	श्री राजीव आर्य	अंतरंग सदस्य
20	श्री आचार्य रणवीर	उप मंत्री
21	श्री ओमप्रकाश शास्त्री	अंतरंग सदस्य
22	श्री जोगीराम आर्य	अंतरंग सदस्य
23	श्रीमती अर्चना खण्डेलवाल	अंतरंग सदस्य
24	डॉ विकम आर्य	अंतरंग सदस्य
25	श्री घनश्याम पटेल	अंतरंग सदस्य
26	श्री राजू सिंह	अंतरंग सदस्य
27	श्री रोहित शास्त्री	अंतरंग सदस्य
28	श्री शशिभूषण आर्य	अंतरंग सदस्य
29	श्री हेमंत कुमार सोनी	अंतरंग सदस्य
30	श्री महिपत मुनी	अंतरंग सदस्य

अतः एतद् द्वारा आज दिनांक 04/07/2023 को प्रमाणित प्रतिलिपि जारी की जाती है।

(अनुपमा कुजूर)
सहायक रजिस्ट्रार
फर्म्स एवं संस्थाऐं, छत्तीसगढ़

संयुक्तांक

निर्धारित घोषणा पत्र फार्म क्रमांक-1

मैं **डॉ. रामकुमार पटेल** आत्मज स्व. भगतराम पटेल घोषित करता हूं कि मैं मासिक 'अग्निदूत' के नाम पर पत्रिका का मुद्रक/प्रकाशक/प्रधान संपादक हूँ, जो मासिक 'अग्निदूत' जो वैदिक मुद्रणालय, छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) से मुद्रित एवं छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) मासिक अग्निदूत कार्यालय से प्रकाशित होगा।

अतः इस संबंध में निम्नलिखित तथ्य मेरी जानकारी एवं विश्वास के अनुसार सत्य एवं सही है।

1.	समाचार पत्र का शीर्षक	:	अग्निदूत
2.	किस भाषा में प्रकाशित होगा	:	हिन्दी
3.	प्रकाशन की अवधिकता		
	अ. दैनिक/साप्ताहिक/अर्धसाप्ताहिक/ दैनिक वार्षिक या जो हो	:	मासिक
	ब. दैनिक होने के संबंध में कृपया लिखे कि वह संध्या या प्रातः प्रकाशित होते हैं।		
	स. दैनिक के अतिरिक्त अगर कुछ और है तो कृपया प्रकाशन दिवस दीजिए	:	प्रत्येक माह की एक तारीख
4.	प्रत्येक प्रति कीी कीमत एक पत्र की	:	रु. 10/- रुपये मात्र
	अ. अगर इसमें निःशुल्क वितरण के लिए हो तो ऐसा लिखें .	:	लागू नहीं
	ब. अगर इसमें कोई कीमत नहीं हो तो	:	लागू नहीं
5.	प्रकाशक का नाम	:	डॉ. रामकुमार पटेल
	राष्ट्रीयता	:	भारतीय
	पता-	:	130/3, मोदीपारा ईस्ट, रायगढ़ (छ.ग.) 496001
6.	प्रकाशन स्थल का नाम व पूरा पता	:	मासिक अग्निदूत कार्यालय छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर,दुर्ग (छ.ग.) 491001
7.	मुद्रक का नाम	:	डॉ. रामकुमार पटेल
	राष्ट्रीयता	:	भारतीयता
	पता	:	130/3, मोदीपारा ईस्ट, रायगढ़ (छ.ग.) 496001
8.	मुद्रण स्थल का पता और चौहद्दी जहां मुद्रण कार्य संपन्न होता है :	:	वैदिक मुद्रणालय, छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर,दुर्ग (छ.ग.) 491001
9.	सम्पादक का नाम	:	कर्मवीर शास्त्री
	राष्ट्रीयता	:	भारतीयता
	पता	:	बी/8, धरम कालोनी, एडू, छाल, धरमजयगढ़ रायगढ़
10.	स्वामित्व	:	डॉ. रामकुमार पटेल
	अ. व्यक्तिगत रुप से प्रत्येक पता फार्म यदि हो, ट्रस्ट या समितियां, संस्था जो कि स्थायी हो,	:	छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर,दुर्ग (छ.ग.) 491001
	ब. अगर स्वामी किसी और भी समाचार पत्र का मालिक या भागीदार हो तो उसका भी पूर्ण ब्यौरा, भाषा और प्रकाशन स्थल लिखें .	:	लागू नहीं
11.	कृपया सूचित करें कि यह घोषणा पत्र		
	अ. नये समाचार पत्र के लिए है		
	ब. वर्तमान समाचार पत्र के लिए है तो नये घोषणा पत्र देने का कारण बतावें।	:	प्रकाशक, मुद्रक एवं प्रकाशन (मुद्रण) स्थल व नाम परिवर्तन

कृपया अगर मुद्रक और प्रकाशक एक व्यक्ति नहीं हैंतो अलग-अलग घोषणा पत्र मुद्रक और प्रकाशक दें।

भवदीय

(डॉ. रामकुमार पटेल)

प्रकाशक/स्वामी

130/3, मोदीपारा ईस्ट, रायगढ़ (छ.ग.)

मोबा. : 9425252510

समाचार प्रवाह

महर्षि दयानन्द सरस्वती की 200वीं जयन्ती पर तीन दिवसीय "वेद कथा" सम्पन्न

पत्थलगांव (जशपुर) । गुरुकुल आश्रम सलखिया, अग्रवाल सभा एवं अग्रवाल महिला मंडल पत्थलगांव, छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा दुर्ग के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 28, 29 व 30 अक्टूबर 23 को स्थान अग्रसेन भवन, अम्बिकापुर रोड पत्थलगांव, जिला–जशपुर में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के 200वीं जयन्ती के शुभ अवसर पर ईश्वर की वाणी "वेद कथा" का आयोजन किया गया।

वेद कथा का आयोजन प्रतिदिन प्रातः 8 बजे से आचार्य दिलीप आर्य जी के ब्रह्मत्व में देवयज्ञ से प्रारम्भ होकर सायं 3 बजे से 6 बजे तक वेदों के विद्वान वेद कथा वाचक गुरुकुल हरिपुर (उड़ीसा) के संचालक डॉ. सुदर्शन देव जी एवं गुड़गांव (हरियाणा) से मुनि आनन्द स्वरुप जी द्वारा बहुत ही सुन्दर ढंग से वेदों का प्रतिपादन किया गया। विद्वानों द्वारा बताया कि वेद ही मात्र ईश्वर प्रदत्त ज्ञान है शेष सभी ऋषि–मुनियों एवं संतों द्वारा रचित है। वेद मानव मात्र के कल्याण की बातों को बताता है। वेदों में कहीं पर भी पक्षपात की संभावना नहीं है, क्योंकि वेदों का ज्ञान देने वाला परमपिता परमात्मा पक्षपात रहित है वेदों में ईश्वर के स्वरुप का वर्णन जैसा है, वैसा अन्यत्र कहीं पर भी नहीं है, अर्थात् ईश्वर के सही स्वरुप को वेदों के माध्यम से ही समझा जा सकता है।

विद्वानों के द्वारा वैदिक कर्मफल सिद्धान्त पर प्रकाश डाला गया, वैदिक योग के स्वरुप का वर्णन किया गया वेदों की कथा से श्रोतागणों में सच्चे ईश्वर एवं ईश्वर द्वारा प्रतिपादित वेदों के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हुई तथा उन्हें वैदिक सिद्धान्तों का परिज्ञान हुआ। कथा के मध्य–मध्य में कोलकाता से पधारे भजनोपदेशक डॉ. कैलाश कर्मठ जी एवं बंदायूँ उत्तरप्रदेश से पधारी बहन पुष्पा शास्त्री जी द्वारा ज्ञानवर्धक वैदिक भजन सुनने को प्राप्त हुये। भजनोपदेशकों के भजनों से श्रोतागणों में धर्म एवं भक्ति का संचार हुआ। वेद कथा के अंतिम दिवस में गुरुकुल आश्रम सलखिया के ब्रह्मचारियों द्वारा वरिष्ठ व्यायाम शिश्रक श्री नूतन कुमार आर्य जी के नेतृत्व में सुन्दर व्यायाम प्रदर्शन किया गया यह प्रदर्शन शहरवासियों के लिए प्रेरणास्रोत रहे वेद कथा के समापन समारोह में गुरुकुल आश्रम सलखिया के अध्यक्ष मुनि जोगीराम जी द्वारा बताया गया कि इस वेद कथा के आयोजन के लिए माननीय श्री दीनदयाल गुप्ता जी (डॉलर इण्डस्ट्रीज कोलकाता) की प्रेरणा प्राप्त हुई, उन्हीं की प्रेरणा से इस वेद कथा का आयोजन किया गया, समापन समारोह में स्वामी विशुद्धानन्द सरस्वती जी गोपालपुर (उड़ीसा) का आशीर्वाद सभी आयोजकों एवं श्रोताओं को प्राप्त हुआ।

समापन समारोह के अवसर पर छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ड़ॉ. रामकुमार पटेल, गुरुकुल आश्रम तुरंगा के आचार्य राकेश जी, पत्थलगांव आर्यसमाज से देव प्रकाश, पालीडीह आर्यसमाज से रविशंकर जी, राजगांव आर्यसमाज से प्रहलाद प्रसाद आर्य, पत्थलगांव अग्रवाल सभा के अध्यक्ष श्री मदनलाल अग्रवाल जी, सचिव श्री प्रयागराज अग्रवाल जी, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के जिला प्रमुख श्री मुरारीलाल अग्रवाल जी, जिला व्यवस्था प्रमुख श्री शंकरवाल अग्रवाल जी, भिवानी हरियाणा से सुभाष आर्य जी, पत्थलगांव से अनिल अग्रवाल जी, रामलाल अग्रवाल जी, भीमराज अग्रवाल जी, रामनिवास जिंदल जी, मुनि महिपत लाल जी, मुनि हेमसागर जी, मुनि रामनाथ जी, मुनि डिलेश्वर जी, गुरुकुल आश्रम सलखिया के समस्त शिक्षक, कर्मचारियों आदि अनेक धर्मप्रेमी सज्जनों, माताओं आदि श्रद्धालुओं की उपस्थिति रही।

संवाददाता : सुनील गुप्ता, गुरुकुल सलखिया आश्रम, रायगढ़ (छ.ग.)

स्वामी मुनीश्वरानन्द जी का महाप्रयाण

पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती कुलाधिपति गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ उत्तरप्रदेश की प्रेरणा और आशीर्वाद से पश्चिम ओड़िशा में शिक्षा, संस्कृति और समृद्धि के उत्थान के लिए नूआंपाली जिला बरगड़ ओड़िशा में गुरुकुल नवप्रभात आश्रम की स्थापना करने वाले त्यागी, तपस्वी तथा **"परोपकराय सतां विभूतयः"** को चरितार्थ करने वाले स्वनामधन्य पूज्य स्वामी मुनीश्वरानन्द जी का दिनांक 8 अक्टूबर 2023 को देहावसान हुआ था, जिनका अन्त्येष्टि संस्कार 9 अक्टूबर 23 को वैदिक रीति के अनुसार सम्पन्न हुआ। वेदमंत्रों के उच्चारण गाजे-बाजे के साथ उनकी अंतिम यात्रा आश्रम भूमि से आरंभ होकर समीपस्थ मैदान की ओर अग्रसर हुई। उनके अंतिम दर्शन के लिए साधु-संन्यासी, वानप्रस्थी, विद्वान्, गुरुकुल के आचार्य, स्नातक, आर्य नर-नारी तथा नवप्रभात गुरुकुल के ब्रह्मचारी, स्वर्ज्योति कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियां एवं विद्यायतन के छात्र-छात्राएं व अध्यापिकाएं उपस्थित थीं। सभी ने उन्हें नम आंखों से अंतिम बिदाई दी। इस अवसर पर स्वामी सुरेश्वरानन्द जी, स्वामी नारदानन्द जी, सुरेशमुनि जी, सचेतस मुनि जी, गुरुकुल आमसेना के आचार्य योगेन्द्र कुमार जी, आचार्य बृहस्पति जी, आचार्य कृष्णदेव जी, अध्यक्ष भगवानदेव जी, आचार्य प्रेमप्रकाश शास्त्री, आचार्य पुरंदर शास्त्री, आचार्य भारती नंदन जी, आचार्य सोमदत्त जी, कवीन्द्र आर्य जी, आचार्य शारदा जी, आचार्या अहल्या जी, आचार्या वरेण्या जी, अंचलवासी आश्रम के अनेक श्रद्धालु आर्य नर-नारी और अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। स्वामी सुरेश्वरानन्द जी ने अपनी पवित्र वाणी से भावभीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। दिवंगत आत्मा को शत-शत नमन करते हुए शांतिपाठ के साथ शोक सभा सम्पन्न हुई।

- संवाददाता-कार्यालय नवप्रभात

"अग्निदूत" के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र 'अग्निदूत' के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क 100/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय में भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रुप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क 800/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा इस मास से 'अग्निदूत' भेजना बंद कर दिया जायेगा। पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाउन्ट नं. 32914130515 आई.एफ.एस.सी. कोड **SBIN0009075** कोड नं. है। जिसमें आप बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. 0788-4225499 द्वारा सूचित करते हुए अलग से पत्र लिखकर अवगत करा सकते हैं। 'अग्निदूत' मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया आचार्य जगबन्धु आर्य (कोषाध्यक्ष) से चलभाष नं. 9770331191में सम्पर्क कर सकते हैं।

कार्यालय पता :- 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग,) 491001 फोन : 0788-4225499

आर्य समाज सेक्टर-6, भिलाई में दीपावली मिलन एवं महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस का समापन कार्यक्रम दिनांक 26-11-23 रविवार को सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री दिल्ली, विशिष्ट वक्ता आचार्य अजय आर्य,उपस्थित थे। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा से श्री अवनीभूषण पुरंग (मंत्री), श्री रामनिवास गुप्ता (उपप्रधान), श्री जगबन्धु शास्त्री (कोषाध्यक्ष) उपस्थित रहे की चित्रमय झलकियाँ।

दिनांक 26-11-23 को वैदिक सत्संग समिति एवं पतंजलि योग समिति के तत्वावधान में दीपावली मिलन एवं महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस वृंदावन हॉल रायपुर में मनाया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री दिल्ली, विशिष्ट वक्ता आचार्य अजय आर्य, पंडित कमलनारायण आर्य उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के डॉ. पूर्णेन्द्र सक्सेना थे। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से श्री अवनीभूषण पुरंग (मंत्री), श्री रामनिवास गुप्ता (उपप्रधान), श्री जगबन्धु शास्त्री (कोषाध्यक्ष) उपस्थित थे।

CHH-HIN/2006/17407 अक्टूबर+नवम्बर 2023 डाक पंजी.छ.ग./दुर्ग संभाग/99/2021-23

प्रेषक :
"अग्निदूत" हिन्दी मासिक पत्रिका,
कार्यालय–छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001

अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लायसेंस नं. : TECH/1-170/CORR/CH-4/2019-20-21

गुरुकुल आश्रम सलखिया, अग्रवाल सभा एवं अग्रवाल महिला मंडल पत्थलगांव, छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा दुर्ग के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 28, 29 व 30 अक्टूबर 23 को स्थान अग्रसेन भवन, अम्बिकापुर रोड पत्थलगांव (जशपुर) में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के 200वीं जयन्ती के शुभ अवसर पर "वेद कथा" सम्पन्न हुआ की झलकियाँ